अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

पहलगाम, कश्मीर में आतंकी हमले में शिकार हुए निर्दोष पर्यटकों की आत्मा को ईश्वर अपने निकटस्थ स्थान दें।

पेज :8

पेज : 2

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

सबसे बड़ी खबर

भव्य खबर

RNI No.- DELHIN/2016/68043

नई दिल्ली संस्करण, नई दिल्ली, गुरुवार, 24 अप्रैल 2025, वर्ष : 9, अंक : 28 पृष्ठ : 08, मूल्य : 02 रुपया

नई दिल्ली से प्रकाशित व दिल्ली, एनसीआर, यूपी, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, गुजरात में प्रसारित

संक्षिप्त समाचार

पर्दे के पीछे छिपे मास्टरमाइंड को नहीं छोड़ेंगे

पहलगाम अटैक पर बोले रक्षा मंत्री- ऐसा जवाब मिलेगा कि दुनिया देखेगी

नईदिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मंगलवार पहलगाम में एक धर्म विशेष को निशाना बनाकर आतंकवादियों ने कायराना हरकत की जिसमें कई निर्दोष लोगों की जान चली गई। उन्होंने आगे कहा कि मैं देशवासियों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि सरकार हर जरूरी कदम उठाएगी। हम न सिर्फ इस कृत्य के दोषियों तक पहुंचेंगे बल्कि पर्दे के पीछे के किरदारों तक भी पहुंचेंगे।

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में दो विदेशी नागरिक सहित 25 लोगों की जान चली गई। श्रीनगर से लेकर दिल्ली तक, हाईलेवल मीटिंग चल रही है। इसी बीच राजनाथ सिंह ने आतंकी हमले पर चिंता जाहिर करते हुए कहा, कल पहलगाम में एक धर्म विशेष को निशाना बनाकर आतंकवादियों ने कायराना हरकत की, जिसमें कई निर्दोष लोगों की जान चली गई।

आतंकियों को मिलेगा करारा जवाब– राजनाथ सिंह ने आगे कहा,मैं देशवासियों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि सरकार हर जरूरी कदम उठाएगी। हम न सिर्फ इस कृत्य के दोषियों तक पहुंचेंगे बल्कि पर्दे के पीछे के किरदारों तक भी पहुंचेंगे। आरोपियों को जल्द ही जोरदार और स्पष्ट जवाब मिलेगा, यह मैं देश को आश्वस्त करना चाहता हूं।

पहलगाम अटैक पर पाकिस्तान को थैंक यू बोलने वाला गिरफ्तार

नईदिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम में पर्यटकों पर आतंकी हमले के बाद बोकारो पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। युवक ने हमले के बाद सोशल मीडिया एक्स पर पाकिस्तान को थैंक्यू लिखा था। युवका का नाम मो. नौशाद है। उसके पिता का नाम मो.

मुश्ताक है। चास थाने की पुलिस ने उसे मिल्लतनगर से अरेस्ट किया है।

सुप्रीम कोर्ट में रखा गया मौन– सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। सुप्रीम कोर्ट के जज और स्टाफ ने हमले में मृतकों को मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

महाराष्ट्र सरकार 5 लाख की मदद देगी, 6 पर्यटक मारे गए– पहलगाम हमने में मारे गए पर्यटकों में 6 महाराष्ट्र के भी हैं। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि इन पर्यटकों के परिजनों को 5 लाख रुपए की मदद दी जाएगी।

पाकिस्तान को सता रहा एयरस्ट्राइक का डर

- भारत के एक्शन के डर से टेंशन में पाकिस्तान, रातभर जागे रहे सेना के अधिकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 पर्यटकों की मौत के बाद से पूरा देश आक्रोशित है। सरकार ने साफ कर दिया है कि इसके हमले को अंजाम देने वाले किसी भी आतंकी को बख्शा नहीं जाएगा। उधर पहलगाम हमले के बाद से ही पाकिस्तानी सेना में दहशत फैल गई है।

पाकिस्तान को डर सता रहा है कि भारत हमले का बदला लेने के लिए एयरस्ट्राइक कर सकता है। पाकिस्तानी सेना में सीमा पार अलर्ट जारी किया हुआ है और पाक सेना के अधिकारी इसी आशंका के चलते रात भर जगे रहे।

पाकिस्तानी सेना में बढ़ी हलचल– फ्लाइट डाटा दिखा रहा है कि भारत से डरकर पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर के पास स्थित अपने बेस पर मिलिट्री विमानों को डिप्लॉय कर रहा है। डेटा के मुताबिक, पाकिस्तानी एयरफोर्स का हरकुलिस एयरक्राफ्ट पीएएफ 189 कराची एयरकमांड से लाहौर लाया गया है। वहीं पाकिस्तान में वीआईपी ट्रांसपोर्ट या इंटेलीजेंस ऑपरेशन के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एम्ब्रेयर फेनोम 100 पीएएफ 101 कराची बेस से रावलपिंडी बेस पर भेजा गया है।

27 पर्यटकों का खून माफ नहीं करेगा हिंदुस्तान

- आतंकियों और उसके आका पाक को सबक सिखाने की तैयारी...
- पीएम मोदी, अमित शाह एक्शन में, एनएसए डोभाल के साथ रक्षा मंत्री की बैठक
- पहलगाम अटैक के 3 संदिग्ध आतंकियों के स्केच जारी

श्रीनगर/नईदिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को आतंकवादियों ने बर्बरता दिखाते हुए निर्दोष पर्यटकों को नाम और धर्म पूछकर गोलियों से भून डाला। आतंकी हमले के खिलाफ पूरे देश में गुस्सा है, तो केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार आतंकवादियों को कड़ी सबक सिखाने की तैयारी में जुट गई है। 27 पर्यटकों का खून माफ नहीं करेगा हिंदुस्तान और आतंकियों और उसके आका पाक को सबक सिखाने की तैयारियां शुरु हो गई थी। हमले के कुछ देर बाद श्रीनगर पहुंचे गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को पहलगाम का एरियल सर्वे किया और बैसरन में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एयरफोर्स के एक कार्यक्रम में कहा- पहलगाम हमले के विरोध में जोरदार तरीके से एक्शन नजर आएगा। आतंकियों को छोड़ा नहीं जाएगा। उचित समय पर भारत जवाब देगा। आतंक के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस की पॉलिसी है। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में 'मिनी स्विट्जरलैंड' के नाम से मशहूर प्रमुख पर्यटक स्थल बैसरन में मंगलवार को आतंकवादियों ने हमला कर दिया था।

प्रधानमंत्री ने कहा- उनका नापाक मंसूबा कभी कामयाब नहीं होगा

पीएम मोदी ने कहा- पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। इस घिनौने कृत्य के पीछे जो भी लोग हैं, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। उनका नापाक मंसूबा कभी कामयाब नहीं होगा। आतंकवाद से लड़ने का हमारा संकल्प अडिग है और यह और भी मजबूत होगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, छुट्टियां मनाने आए पर्यटकों से आतंकियों ने पहले नाम पूछा, इसके बाद उसके फायरिंग की और भाग निकले। हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा ने ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री अमित शाह, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल मनोज सिन्हा, जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला, पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती, असदुद्दीन ओवैसी, अक्षय कुमार, समेत कई नेता और सेलेब्रिटीज ने आतंकी हमले की कड़ी निंदा की और दुख वयक्त किया है...।

दरिंदों के स्केच जारी

सुरक्षा और इंटेलिजेंस एजेंसियों ने पहलगाम अटैक के संदिग्ध आतंकियों के स्केच जारी किए हैं। इनके नाम आसिफ फौजी, सुलेमान शाह और अबु तल्हा बताए गए हैं। इंटेलिजेंस सूत्रों ने बताया कि हमले का मास्टर माइंड लश्कर–ए तैयबा का डिप्टी चीफ सैफुल्लाह खालिद है, जो पाकिस्तान में मौजूद है। इधर, नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी भी जांच के लिए पहलगाम पहुंच गई है।

हमले की जिम्मेदारी लश्कर–ए–तैयबा के प्रॉक्सी विंग द रजिस्टेंस फ्रंट ने ली है। इस बीच, पाकिस्तान के डिफेंस मिनिस्टर ख्वाजा आसिफ ने कहा कि इस हमले में हमारा कोई हाथ नहीं है।

हमले में मारे गए एनए 14 में लेफ्टिनेंट विनय नरवाल को उनकी पत्नी हिमांशी ने अंतिम विदाई दी। जिस ताबूत में उनका शव रखा था, हिमांशी उससे लिपटकर रोती रहीं। विनय और हिमांशी की शादी इसी महीने 16 तारीख को हुई थी।

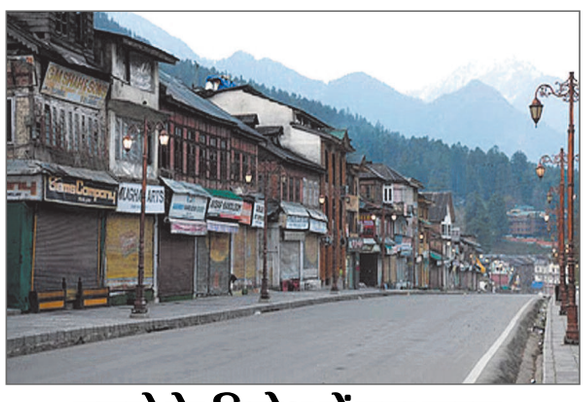

पहलगाम में मंगलवार दोपहर हुए आतंकवादी हमले में 27 लोगों की मौत हो गई। 20 से ज्यादा लोग घायल हैं।

हमले के विरोध में पूरा जम्मू-कश्मीर बंद, घाटी में 35 वर्ष में पहली बार इतना बड़ा शटर डाउन

जम्मू (एजेंसी)। कश्मीर घाटी में 35 साल में पहली बार आतंकी हमले के खिलाफ बुधवार को बंद रहा। पहलगाम पर्यटन स्थल में हुई हत्याओं के विरोध में बंद के आह्वान का सभी क्षेत्रों के संगठनों ने समर्थन किया। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में मंगलवार को एक प्रमुख पर्यटन स्थल पर आतंकवादियों ने हमला किया, जिसमें कम से कम 26 लोग मारे गए, जिनमें अधिकतर पर्यटक थे और कई अन्य घायल हो गए। घाटी में सुरक्षा बढ़ा दी गई है, खासकर महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर कड़ी सुरक्षा की गई है। अधिकारियों ने बताया कि श्रीनगर में अधिकांश दुकानें, पेट्रोल पंप और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे। उन्होंने बताया कि शहर भर में केवल आवश्यक वस्तुओं की दुकानें ही खुली रहीं। उन्होंने बताया कि सार्वजनिक परिवहन भी कम रहा, लेकिन निजी वाहन सामान्य रूप से चल रहे थे।

घाटी में कई स्थानों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन

अधिकारियों ने बताया कि घाटी में निजी स्कूल भी बंद रहे, लेकिन सरकारी स्कूल खुले रहे। उन्होंने बताया कि घाटी के अन्य जिला मुख्यालयों में भी बंद का असर देखा गया। घाटी में कई स्थानों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन भी हुए, जिसमें प्रदर्शनकारियों ने हमले की निंदा की। उन्होंने निर्दोष लोगों की हत्या को रोकने का आह्वान किया।

तुर्किये के इस्तांबुल में 6.2 तीव्रता का भूकंप

1 घंटे में भूकंप के 3 बड़े झटके, मरमारा सागर में था भूकंप का केंद्र

अंकारा (एजेंसी)। तुर्किये के इस्तांबुल में आज 6.2 तीव्रता का एक बड़ा भूकंप आया। इसका केंद्र इस्तांबुल के पास मरमारा सागर में था। तुर्किये की इमरजेंसी मैनेजमेंट एजेंसी ने बुधवार को बताया कि भूकंप से अभी तक किसी तरह के नुकसान या चोट की कोई खबर नहीं है। जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज ने भी भूकंप की पुष्टि की है और कहा है कि भूकंप जमीन से 10 किलोमीटर की गहराई पर था। भूकंप से शहर और आसपास के इलाकों में बड़े झटके महसूस किए गए। लोकल मीडिया की रिपोर्ट्स के मुताबिक भूकंप का सेंटर सिलिवरी के नजदीक था, जो तटीय क्षेत्र है और भूकंपीय एक्टिविटी के लिए जाना जाता है।

पहला भूकंप 3.9 तीव्रता का था और स्थानीय समयानुसार 12:13 बजे सिलिवरी जिले के तट पर आया।

दूसरा भूकंप 6.2 तीव्रता का था और स्थानीय समयानुसार 12:49 बजे उसी इलाके में आया।

तीसरा 4.4 तीव्रता का भूकंप स्थानीय समयानुसार 12:51 बजे इस्तांबुल के बुयुकचेकमेस जिले में आया।

हरियाणा के लेफ्टिनेंट से लिपटकर रो पड़ी पत्नी

- बोली- आई एम प्राउड ऑफ यू, जय हिंद कहकर सैल्यूट किया

करनाल (एजेंसी)। दिल्ली एयरपोर्ट पर पति की पार्थिव देह देखकर पत्नी हिमांशी भावुक होकर लिपट गईं। करनाल में पार्थिव शरीर को ले जाने के लिए फूलों से सजाया वाहन। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों की गोली से कत्ल हुए करनाल के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की नवविवाहित पत्नी उनकी पार्थिव देह से लिपटकर रो पड़ी। विनय का शव करनाल लाने से पहले दिल्ली एयरपोर्ट पर लाया गया था। जहां गुरुग्राम की रहने वाली पत्नी हिमांशी ने विनय के लिए कहा- आई एम प्राउड ऑफ यू (मुझे आप पर गर्व है)। हिमांशी ने विनय को सैल्यूट करते हुए जय हिंद कहा। हिमांशी ने बिलखते हुए कहा-जितने भी दिन साथ में गुजारे, वो बेस्ट थे। मैं अब कैसे जिऊंगी? मैं आपको हर पल याद रखूंगी। आपको सर्वश्रेष्ठ जीवन मिले। हमें आप पर हमेशा गर्व रहेगा।विनय की पार्थिव देह अब दिल्ली से करनाल लाई जा रही है। बता दें कि कल (22 अप्रैल) को पहलगाम में आतंकियों ने नेवी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल (26) की गोली मारकर हत्या कर दी थी। उनकी 7 दिन पहले ही गुरुग्राम की हिमांशी नरवाल से शादी हुई थी। वे दोनों 21 अप्रैल को हनीमून मनाने के लिए पहलगाम गए थे।

ताज को निहारते रह गए वेंस

- अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने पत्नी और बच्चों के साथ किया ताजमहल का दीदार,सिटी पैलेस का दौरा रद्द

आगरा/जयपुर (एजेंसी)। भारत दौरे पर आए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने जयपुर के सिटी पैलेस जाना था, लेकिन यह दौरा रद्द कर दिया गया है। माना जा रहा है कि पहलगाम आतंकी हमले की वजह से यह फैसला लिया गया। इससे पहले बुधवार सुबह वेंस और उनके परिवार से आगरा में ताजमहल देखा बस देखते ही रह गए। करीब 3 घंटे आगरा में बिताने के बाद वे जयपुर लौट आए। फिलहाल वेंस और उनका परिवार रामबाग पैलेस होटल में हैं। वे गुरुवार सुबह साढ़े 6 बजे अमेरिका रवाना होंगे।

अटारी चेक पोस्ट की जाएगी बंद, पाकिस्तान के साथ सिंधू जल समझौता रोका जाएगा, भारतीय विदेश मंत्रालय का बड़ा ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम आतंकवादी हमले के एक दिन बाद विदेश मंत्रालय ने बुधवार को एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया और कहा कि सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) ने आतंकवादी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। विदेश मंत्रालय में विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की अध्यक्षता में आज शाम सीसीएस की बैठक हुई और इसमें 22 अप्रैल 2025 को होने वाले आतंकवादी हमले के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। पहलगाम में हुए हमले में 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक की मौत हो गई। कई अन्य घायल हो गए। विदेश सचिव ने कहा कि सीसीएस ने इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है और पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की आशा व्यक्त की है।

उन्होंने कहा कि दुनिया भर की कई सरकारों से समर्थन और एकजुटता की मजबूत अभिव्यक्ति मिली है, जिन्होंने इस आतंकी हमले की स्पष्ट रूप से निंदा की है। उन्होंने यह भी कहा कि सीसीएस ने ऐसी भावनाओं के लिए अपनी सराहना दर्ज की है, जो आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता को दर्शाती है। सीसीएस को दी गई ब्रीफिंग में आतंकवादी हमले के सीमा पार संबंधों को उजागर किया गया। उन्होंने कहा कि यह ध्यान दिया गया कि यह हमला केंद्र शासित प्रदेश में चुनावों के सफल आयोजन और आर्थिक वृद्धि और विकास की दिशा में इसकी निरंतर प्रगति के मद्देनजर हुआ है।

केंद्रीय सडक़ परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का नया और दिलचस्प प्रस्ताव

-तेज और कर्कश हॉर्न की जगह सुनाई देगी वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सडक़ परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने हाल ही में एक नया और दिलचस्प प्रस्ताव पेश किया है। उन्होंने कहा है कि वह ऐसा कानून लाने पर विचार कर रहे हैं, जिससे गाडिय़ों के तेज और कर्कश हॉर्न की जगह भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि सुनाई दे। हाल ही में दिल्ली में हुए एक कार्यक्रम में बोलते हुए गडकरी ने बताया कि भविष्य में गाडिय़ों के हॉर्न से बांसुरी, तबला, वायलिन और हारमोनियम जैसी सुकून देने वाली आवाजें सुनाई दे सकती हैं।

गडकरी ने इस पहल के पीछे की वजह भी समझाई। उनका कहना है कि सडक़ किनारे होने वाला ध्वनि प्रदूषण कम करना बेहद जरूरी है ताकि लोगों को शहरी माहौल में राहत मिल सके। उन्होंने कहा कि जैसे हम हवा की गुणवत्ता सुधारने की कोशिश करते हैं, वैसे ही अब हमें ध्वनि प्रदूषण को भी गंभीरता से लेना चाहिए। उनका मानना है कि शांत और स्वस्थ माहौल शहरों को रहने लायक बनाएगा।

ट्रांसपोर्ट सेक्टर से 40 प्रतिशत वायु प्रदूषण

गडकरी ने यह भी बताया कि भारत में लगभग 40 प्रतिशत वायु प्रदूषण ट्रांसपोर्ट सेक्टर से आता है। इसी वजह से सरकार ग्रीन मोबिलिटी यानी पर्यावरण के अनुकूल यातायात साधनों को बढ़ावा दे रही है। इसमें बायो-फ्यूल जैसे एथेनॉल और मीथेनॉल से चलने वाली गाडिय़ों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उनका कहना है कि सरकार ऐसे ट्रांसपोर्ट विकल्पों पर काम कर रही है जो पर्यावरण के लक्ष्यों के अनुरूप हों।

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार

गडकरी ने भारत के ऑटोमोबाइल सेक्टर की तेजी से बढ़ती ताकत पर भी रोशनी डाली। उन्होंने बताया कि 2014 में भारतीय ऑटो सेक्टर की वैल्यू करीब 14 लाख करोड़ रुपये थी, जो आज बढक़र 22 लाख करोड़ रुपये हो गई है।

अशोक भाटिया

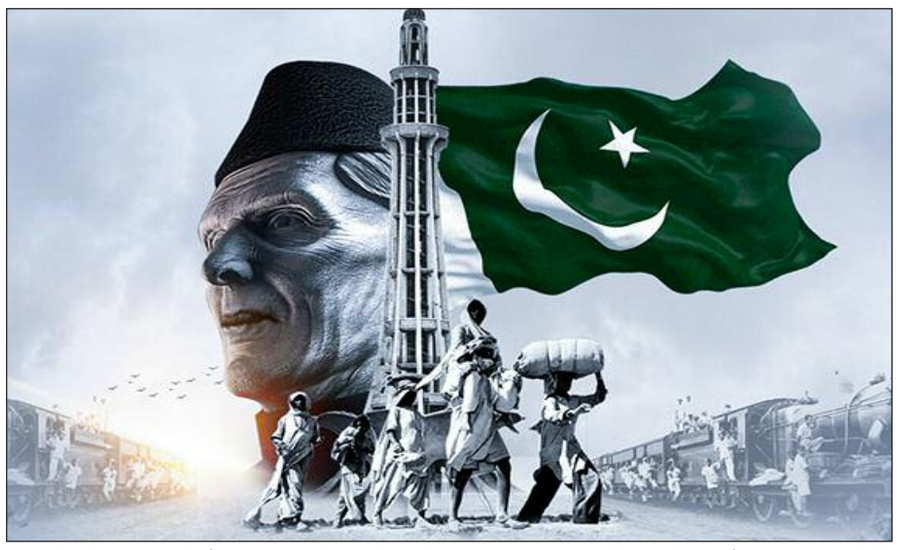

पाकिस्तान के टुकड़े-टुकड़े होने का वक्त आ गया है। दरअसल पाकिस्तान के टूटने की शुरूआत साल 1971 में हो गई थी, जब भारत की मदद से बांग्लादेश बना. इसके बनने के पीछे भी 24 सालों का असंतोष था. उसके बाद पीओके . सिंधुदेश की मांग व बलूचिस्तान की मांग ने पाकिस्तान के नाक में दम कर रखा है ।

पाकिस्तान की हालत अब टुकड़े - टुकड़े होने तक पहुंची

खैबर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र में जनाक्रोश लगातार बढ़ रहा है। यह क्षेत्र बुनियादी सुविधाओं, बिजली, स्वास्थ्य सेवाओं और रोजगार की कमी से जूझ रहा है, जिसके कारण स्थानीय लोग सड़कों पर उतर आए हैं। वर्तमान में, लोग सरकार से बिजली, स्वास्थ्य सेवाएं और अन्य बुनियादी जरूरतों की बहाली की मांग कर रहे हैं। विरोध प्रदर्शन लगातार बढ़ रहे हैं, और विरोध करने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। लोग गर्मी के बावजूद अपनी आवाज उठाने के लिए सड़कों पर हैं। प्रदर्शनकारियों ने स्पष्ट किया है कि जब तक उनकी सभी मांगें पूरी नहीं होतीं, उनका आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शनकारियों कह रहे हैं कि पाकिस्तान के टुकड़े-टुकड़े होने का वक्त आ गया है। दरअसल पाकिस्तान के टूटने की शुरूआत साल 1971 में हो गई थी, जब भारत की मदद से बांग्लादेश बना. इसके बनने के पीछे भी 24 सालों का असंतोष था. उसके बाद पीओके . सिंधुदेश की मांग व बलूचिस्तान की मांग ने पाकिस्तान के नाक में दम कर रखा है । सिंधुदेश की मांग की तो इसको लेकर हालिया हुई रैली में प्रदर्शनकारियों के हाथों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई विश्व के कई बड़े नेताओं की तस्वीरें नजर आईं। प्रदर्शनकारियों ने सिंध प्रांत को अलग देश बनाने की मांग के मामले में विश्व के नेताओं से दखल देने की अपील की है ।सिंधु देश की मांग की कहानी 1947 से जुड़ी है। भारत को आजादी मिलने के बाद सिंधु क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया और पाकिस्तान के चार प्रांतों में से एक बन गया । अलग सिंधु देश की मांग 1967 से शुरू हुई जब पाकिस्तान सरकार ने यहां के निवासियों के ऊपर उर्दू भाषा थोप दी। यहां के लोगों ने इसका विरोध किया और इसके फलस्वरूप सिंधी अस्मिता का जन्म हुआ। इन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति की दुहाई दी और लोगों को एकजुट किया. इस मुहिम में सिंधी हिन्दू और सिंधी मुसलमान दोनों शामिल हुए। 'सिंधु देश' जिसका शाब्दिक अर्थ होता है सिंधियों के लिए अलग देश। सिंधु देश एक विचार है जो पाकिस्तान के सिंध प्रांत में बसे और दुनिया भर में फैले सिंधियों का एक सपना है। ये सिंधी दुनिया दूसरे एथनिक समुदायों की तरह अपने लिए एक अलग होमलैंड की मांग करते आ रहे हैं। जैसे कुर्द अपने लिए अलग देश की मांग करते हैं। यहूदी समुदाय के लोगों ने इजरायल नाम का अपना देश बनाया है। उसी तरह सिंधी पाकिस्तान के अंदर एक निश्चित भूभाग में अपने लिए एक स्वतंत्र और सार्वभौम मातृभूमि चाहते हैं। फिलहाल पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सबसे ज्यादा हिंदू आबादी रहती है। पाकिस्तान की कुल हिंदू आबादी का करीब

95 फीसदी सिंध प्रांत में हैं। पाकिस्तान के उत्पीड़न से त्रस्त इन लोगों ने अब वैश्विक नेताओं से गुहार लगाई है. वहीं, प्रदर्शनकारियों के हाथ में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर होने के पीछे एक बड़ी वजह है। कश्मीर की स्थिति को लेकर हुई एक सर्वदलीय बैठक में मोदी ने कहा था कि समय आ गया है, अब पाकिस्तान को विश्व के सामने बलूचिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में लोगों पर हो रहे अत्याचारों का जवाब देना होगा। मोदी के इस बयान के चलते बलोच आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय मीडिया में काफी तवज्जो मिली थी। इसके बाद 2016 में भारत के 70वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से बलूचिस्तान, गिलगित और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के लोगों का आभार व्यक्त किया था। दरअसल, पीएम मोदी के बयान के बाद पाकिस्तान में जुल्मो-सितम झेल रहे इन हिस्सों के लोगों ने उनकी आवाज उठाने के लिए मोदी को सोशल मीडिया पर धन्यवाद दिया था ।हाल ही में पाकिस्तान के सिंध प्रांत के जमसोरो जिले में जीएम सैयद के गृहनगर सान कस्बे में हुई रैली में लोगों ने आजादी के लिए नारे लगाए गए. प्रदर्शनकारियों ने इस दौरान दावा सीधे तौर पर कहा- सिंध, सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक धर्म का घर है. ब्रिटिश साम्राज्य ने इस पर अवैध रूप से कब्जा कर लिया था और 1947 में पाकिस्तान के इस्लामी हाथों में दे दिया था। अलग सिंधुदेश की मांग को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर उठाया जा रहा है। इन लोगों का मानना है कि पाकिस्तान ने सिंध प्रांत पर जबरन कब्जा कर रखा है। साथ ही पाकिस्तान संसाधनों का दोहन और मानवाधिकारों के जमकर उल्लंघन करता है। जिये सिंध मुत्ताहिदा महाज के चेयरमैन मुहम्मद बरफात ने कहा कि हमारी संस्कृति और इतिहास पर हुए दशकों से जारी हमलों के बावजूद हमने अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को बचाकर रखा है। हम आज भी बहुलतावादी, सहिष्णु और सौहार्दपूर्ण समाज हैं, जो मानव सभ्यता को बचाकर रखे हुए है। पाकिस्तान के निर्माण के बाद से ही बलूचिस्तान, गिलगित और पाक अधिकृत कश्मीर में असंतोष बढ़ने लगा था। पाकिस्तानी हुकूमत पर पंजाबी वर्ग के वर्चस्व से लेकर मानवाधिकारों के उल्लंघन तक पाक के नापाक इरादों की एक लंबी दास्तान है। इन सबके बीच अब चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर के चलते भी पाक में भारी असंतोष फैल रहा है। पाकिस्तान के इन हिस्सों की आवाम अब खुलकर अपना विरोध दर्शा रही है। बीते कुछ वर्षों में भारत की वर्तमान मोदी सरकार पर इन लोगों का भरोसा बढ़ा है। ऐसे में अलगाववादी रैली में प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर नजर आने से पाकिस्तान की पेशानी पर फिर से बल पड़ सकते हैं। अब देखना यह है कि अलग सिंध देश की मांग से क्या पाकिस्तान के टुकडे होंगे ? होंगे तो कितने होंगे ? सिंध देश यदि अलग बन जाता है तो वहां रहने वाले सिन्धी हिन्दुओं को इसका कितना लाभ मिल सकेगा ? सिन्धु देश की मांग के आलावा साल 1947 में पाकिस्तान के बनने के साथ ही बलूच मुद्दे ने उसकी नाक में दम कर रखा है। आएदिन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी की खबरें आती हैं कि उसने अपने यहां कोई धमाका कर दिया, जिसमें पाकिस्तान सरकार या चीन के लोग मारे गए। इसके अलावा भी कई चरमपंथी संगठन हैं, जो बलूच आजादी चाहते हैं ।दरअसल ये पाकिस्तान का वो हिस्सा है, जो कभी भी सरकार के बस में नहीं रहा। इसकी दो वजहें हैं- एक, पाकिस्तान ने धोखे से उसे अपने साथ मिला लिया। और दूसरा, बलूचिस्तान मानता है कि पाकिस्तान उसके साथ सौतेला व्यवहार करता रहा। पाकिस्तान अधिकृत बलूचिस्तान की लीडर डॉ नायला कादरी हाल ही में हरिद्वार पहुंची। बलूच आजादी की मांग के चलते अपने ही देश से निर्वासित डॉ कादरी ने खुद को बलूचिस्तान की प्रधानमंत्री की तरह पेश करते हुए मां गंगा से अपने देश की आजादी की मांग की। साथ ही उन्होंने बताया कि कैसे पाकिस्तान की सरकार बलूच लोगों पर जुल्म करती है। उनका कहना है कि गैस, कोयला, तांबा और कोयला जैसे कच्चे माल में बेहद संपन्न होने के बाद भी हमारा इलाका काफी गरीब है। यहां तक कि स्कूल और अस्पताल जैसी बेसिक जरूरतें भी वहां पूरी नहीं हो पा रहीं। पाकिस्तान ने अपने कर्ज चुकाने के लिए यहां की खदानों को चीन को लीज पर दे दिया। ये बलूच लोगों पर दोहरी मार थी। वे मानने लगे कि उन्हें पाकिस्तान और चीन दोनों मिलकल लूट रहे हैं। इसके आलावा गिलगित-बाल्टिस्तान पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का सबसे उत्तरी इलाका है। यहां पर भी लंबे समय से आजादी की मांग चल रही है। चरमपंथी संगठनों ने अपने देश का नाम भी तय कर रखा है- बलवारिस्तान यानी ऊंचाइयों का देश। ये इसलिए क्योंकि ये पूरा इलाका ही पहाड़ों और वादियों का है ।समय-समय पर यहां आंदोलन होते रहे। यहां के नेताओं का आरोप है कि पाकिस्तान का सबसे शानदार टूरिस्ट स्पॉट होने के बाद भी वो उन्हें ज्यादा प्रमोट नहीं करती। सरकारी योजनाएं भी यहां पूरी तरह से लागू नहीं होतीं। यही देखते हुए गिलगित-बाल्टिस्तान की मांग होती रही। लेकिन सरकार लगातार इसके लीडर्स को खूनी संघर्ष में खत्म करती रही। इसके अलावा भी पूरे देश में छिटपुट हिस्सों में अलगाववाद पनपता रहा। ये लोग मुहाजिर कहलाते और योजनाओं से दूर रखे जाते हैं। ये भी मुहाजिर सूबे की मांग बीच-बीच में कर लेते हैं। वैसे ये उस तरह के एक्सट्रीम नहीं हैं, जिनपर पाकिस्तान परेशान रहे। अफगानिस्तान में तालिबान आने के बाद से पाकिस्तान का डर और बढ़ा क्योंकि यहां मौजूद पश्तून आबादी अफगानिस्तान का हिस्सा बनने की बात करती आई है। अगर ऐसा हुआ तो लगभग पूरा खैबर पख्तूनख्वा अलग हो जाएगा और पाकिस्तान को टुकड़ों झ टुकड़ों में बनने से कोई रोक नहीं सकता ।

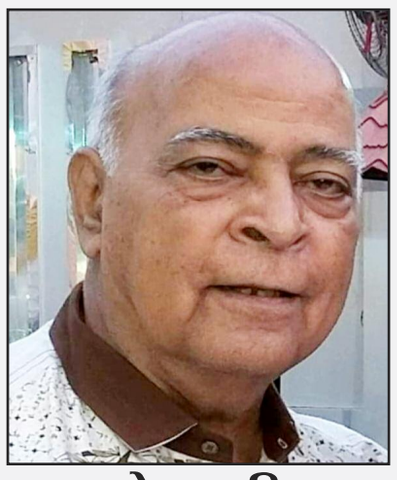

संपादकीय

नौकरशाही का ढरा

अमृता आर. पंडित

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत की नौकरशाही और नीतिनिर्माण प्रक्रिया पुराने ढर्रे पर नहीं चल सकती। इसलिए कि उनकी सरकार जिन नीतियों पर काम कर रही है, वे अगले एक हजार साल के भविष्य को आकार देंगी। नई दिल्ली में सिविल सेवा दिवस समारोह को संबोधित करते हुए सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि अब ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि जो आम नागरिकों के बीच उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है और उन्हें बाधाओं से पार पाने में मदद करता है। इस संदर्भ में उन्होंने औद्योगीकरण और उद्यमिता की गति को नियंत्रित करने वाले नियामक के रूप में नौकरशाही की पुरानी भूमिका का जिक्र भी किया और कहा कि अब ऐसा नहीं चलने वाला। खासकर इसलिए कि एक तो सरकार संकल्पबद्ध है कि 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है, और दूसरा इसलिए भी कि आज का युवा बेहद महत्त्वाकांक्षी है, और किसान और महिलाओं जैसे सामाजिक समूहों के सपने ऊंचे हैं। ऐसे में सरकार की महत्त्वाकांक्षा और आमजन के सपने को पूरा करने में कारगर भूमिका नौकरशाही तभी निभा पाएगी जब वह अपने पुराने ढर्रे को बदले। कामकाज में जवाबदेही हमेशा से तवज्जो पाती रही है, और जवाबदेही के पैमाने पर ही नौकरशाही को चाक-चौबंद रखा जाता रहा है। लेकिन अब नौकरशाही को नई चुनौतियों और नये उभरे आकांक्षी समूहों के सपनों को साकार करने में उत्प्रेरक की भूमिका में आना होगा। उसे अपने कामकाज की गति असाधारण तरीके से तेज रखनी होगी। दरअसल, आज के युवा की परवरिश भी पुराने ढर्रे पर नहीं हुई है। वह अपने कार्यों को लेकर परिणामोन्मुख तेवर रखता है, और अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को पूरा करने में स्वयं भी कोई शिथिलता नहीं बरतता। अदद नौकरी पाने का आकांक्षी भी नहीं रहा। अब वह उद्यमिता से प्रेरित है, इसलिए महज नौकरी पाने की लाइन में खटना नहीं चाहता। दरअसल, तेजी से बदल रहे समय के साथ कदमताल बनाए रखना हर किसी के लिए चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है और कोई भी दौड़. में पीछे छूट जाने को तैयार नहीं है।

चिंतन-मनन

अपनेपन का प्रेम असली प्रेम

जिम्मेवारी लेते हो। पल भर के लिए ऊपरी तौर से नाराजगी व्यक्त कर सकते हो, परन्तु जब इस नाराजगी को दिल से महसूस नहीं करते, तब तुम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हो। तब तुम उस अवस्था में हो जहां सभी समस्याएं और मत-भेद मिट जाते हैं और केवल प्रेम झलकता है। प्रायः हम मतभेदों में उलझे रहते हैं क्योंकि अपने वास्तविक स्वभाव से दूर हो गए हैं। प्रेम के नाम पर हम दूसरों को इच्छानुसार चलाना चाहते हैं। यह स्वाभाविक है कि जब हम किसी से प्रेम करते हैं तो हम चाहते हैं कि वे त्रुटिहीन हो। तुम पहाड़ी के ऊपर से जमीन के गड्ढों को नहीं देख सकते। इसी प्रकार, उन्नत चेतना की अवस्था से दूसरों की त्रुटियां नजर नहीं आती। परन्तु जमीन आकर गड्ढों को (दोषों को) देख सकते हो। और गड्ढों को भरना चाहते हो तो उन्हें देखना ही होगा। हवा में रहकर तुम घर नहीं बना सकते। गड्ढों को देखे बिना, उनको भरे बिना, कंकड़-पत्थर हटाए बिना, जमीन को नहीं जोत सकते। इसीलिए जब तुम किसी से प्रेम करते हो और उनमें दोष ही दोष देखते हो तो उनके साथ रहो और गड्ढे भरने में उनकी मदद करो। यही ज्ञान है। तुम किसी को प्यार क्यों करते हो? क्या उनके गुणों के लिए या मित्रता और अपनेपन के कारण? अपनत्व महसूस किए बिना, केवल उनके गुणों के लिए, तुम किसी से प्रेम कर सकते हो! इस प्रकार का प्रेम प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या पैदा करता है। परन्तु जब प्रेम आत्मीयता के कारण होता है, तब ऐसा नहीं होता। जब तुम किसी को उनके गुणों के लिए चाहते हो और जब उनके गुणों में बदलाव आता है, या जब तुम उनके गुणों के आदी हो जाते हो, तुम्हारा प्रेम भी बदल जाता है। परन्तु प्रेम यदि अपनत्व के भाव से है, क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं, तब वह प्रेम जन्म-जन्मान्तरों तक रहता है। लोग कहते हैं, मैं ईश्वर से प्रेम करता हूं क्योंकि वे महान है। और यदि यह पाया जाए कि ईश्वर साधारण हैं, हमारे जैसे ही एक व्यक्ति, तब तुम्हारा प्रेम समाप्त हो जाएगा। यदि तुम ईश्वर से इसलिए प्रेम करते हो क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं, तब वे चाहे जैसे भी हों, चाहे वे रचना करें

पहलगाम में मजहबी आतंक का सबसे बर्बर चेहरा

जम्मू-कश्मीर में स्थित पहलगाम, जिसे ह्यमिनी स्विट्जरलैंडह्न के नाम से जाना जाता है, मंगलवार को एक भीषण, दर्दनाक एवं अमानवीय आतंकी हमले का गवाह बना, एक बार फिर जिहादी आतंक का घिनौना-बर्बर चेहरा दिखा। आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोष-निहत्थे पर्यटकों की जिस तरह पहचान पता करके गोलियां बरसाईं, उससे यही पता चलता है कि वे केवल खौफ ही नहीं पैदा करना चाहते थे, बल्कि बड़ी संख्या में लोगों का खून बहाकर दुनिया का ध्यान भी खींचना चाहते थे। यह आतंकवाद एवं सांप्रदायिक घृणा का अब तक का सबसे घिनौना एवं बर्बर हमला एवं चेहरा है, जिसमें हिन्दू सुनकर चलाई गोलियां। जो पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के मूल एजेंडे का हिस्सा है। इस जघन्य एवं त्रासद घटना में निर्दोष पर्यटकों को तब मौत की गहरी नींद सुलाया गया, जब अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत में हैं और भारतीय प्रधानमंत्री सऊदी अरब में। इस हमले ने यह प्रकट किया कि कश्मीर में बचे-खुचे आतंकी किसी भी सीमा तक गिरने पर आमादा हैं। आतंकियों ने उन पर्यटकों को निशाना बनाया, जो कश्मीरियों की रोजी-रोटी को ही सहारा देने कश्मीर गए थे। यह हमला इतना वीभत्स था कि उसने हर संवेदनशील दिल को झकझोर कर रख दिया। आतंकियों ने नृशंसता की सारी सीमाएं पार करते हुए अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें 28 पर्यटक, जिनमें दो विदेश नागरिक भी थे, की दर्दनाक मौत हो गई। हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान में स्थित प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) ने ली है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि हमलावरों ने दक्षिण कश्मीर के कोकेरनाग से होते हुए किश्तवाड़ के रास्ते बैसरन तक पहुंच बनाई। घटना दोपहर करीब तीन बजे की है, जब बैसरन के घास के मैदान और आसपास के इलाकों में भारी संख्या में पर्यटक मौज-मस्ती कर रहे थे, कुछ खच्चरों की सवारी का आनंद ले रहे थे तो कुछ परिवार पिकनिक मना रहे थे। तभी घात लगाए बैठे आतंकियों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। इस घटना के लिये सीधे तौर पर पाकिस्तान जिम्मेदार है। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि चंद दिन पहले ही पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष आसिम मुनीर ने किसी जिहादी की तरह हिंदुओं और भारत के खिलाफ अपनी घृणा का भद्दा प्रदर्शन किया था। अबू मूसा का वह भाषण और उसके तुरंत बाद हुआ पहलगाम नरसंहर दशार्ता है कि पीओके में बैठे आतंकी सरगना न केवल भारत विरोधी जहरीला प्रचार फैला रहे हैं, बल्कि कश्मीर घाटी की शांति, विकास एवं सौहार्द को बाधित करने की हर कोशिश को सफल बनाने छक्त्क्कळ्भ्र्व्ध्र्क्त में जुटे हैं। वे आगामी समय में घाटी को फिर से अशांत करने की योजना पर भी काम कर रहे हैं। इस भीषण आतंकी हमले के बाद घाटी में पर्यटन संबंधी कारोबार करीब-करीब ठप पड़ना तय है। आखिर इतनी भयावह घटना के बाद कौन पर्यटक कश्मीर की ओर रुख करेगा? लम्बे समय की शांति, अमन-चैन एवं खुशहाली के बाद एक बार फिर कश्मीर में अशांति एवं आतंक के बादल मंडराये हैं। धरती के स्वर्ग की आभा पर लगे ग्रहण के बादल छंटने लगे थे कि एक बार फिर पहलगाव में आतंकियों ने पूरे देश में आक्रोश की लहर पैदा करने वाली घटना को अंजाम दिया है। अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पहली बार कश्मीर में इतना बड़ा आतंकी हमला हुआ है। आतंकियों और उनके समर्थकों को करारा जवाब दिया जाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। पहलगाम में आतंकी हमले की गंभीरता इससे प्रकट होती है कि जहां गृहमंत्री अमित शाह आनन-फानन श्रीनगर के लिए रवाना हुए, वहीं सऊदी अरब गए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी यात्रा बीच में छोड़कर दिल्ली आ गये। दिल्ली आते ही एयरपोर्ट पर ही एक मीटिंग की, जिसमें अजित डोभाल से गंभीर मंत्रणा के बाद इस आतंकवादी घटना के खिलाफ एक्शन लेना प्रारंभ कर दिया। मोदी एवं शाह के एक्शन से उम्मीद बंधी है कि इस बार कुछ निर्णायक होगा। पहलगाम की सुंदर घाटी को रक्त रंजित करने के लिये आतंकवाद का जिन्न भले ही निकल आया हो, लेकिन इस बार निर्दोष एवं बेकसूर लोगों का रक्त व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। यह हमला पाकिस्तान की बौखलाहट का नतीजा है, उसी के इशारे पर किया गया। यह मानने के पुख्ता एवं पुष्ट कारण हैं कि पाकिस्तान सुलगते बलूचिस्तान से दुनिया का ध्यान हटाना चाहता है और उसे यह रास नहीं आ रहा कि कश्मीर में स्थितियां तेजी से सामान्य होती जा रही हैं। भारत को पाकिस्तान के शैतानी इरादों के प्रति और अधिक सतर्क रहना चाहिए था। वह न पहले भरोसे लायक था और न अब। अब आतंकियों को शह और सहयोग देने वाले पाकिस्तान को निर्णायक रूप से सबक सिखाया जाना ज्यादा जरूरी हो गया है। तहव्वुर राणा का प्रत्यर्पण आतंकवाद के खिलाफ भारत की एक बड़ी जीत बनी है, जिससे भी पाकिस्तान भयभीत बना। मुंबई सहित देश के अन्य हिस्सों और विशेषतः जम्मूकश्मीर में आतंकी हमले की पूरी प्लानिंग के पीछे पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई व उसकी जमीन पर सक्रिय आतंकवादी संगठनों का हाथ न केवल था, बल्कि आर्थिक एवं अन्य तरह का सहयोग भी शामिल है। पहलगाम की ताजा घटना हो या बार-बार होने वाली आतंकी घटनाएं तमाम सबूत होने के बाद भी पाकिस्तान इन हमले के पीछे अपनी कोई भूमिका होने से इनकार करता रहा है। हालांकि वह आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद और जकी-उर-रहमान लखवी जैसे आतंकवादी सरगनाओं को बचाता भी रहा है। राणा के माध्यम पाकिस्तान का पूरा सच देश एवं दुनिया के सामने आने का डर पाकिस्तान को सता रहा था, तभी उसने इस पहलगाम की घटना को अंजाम दिया। लेकिन अब हद हो गयी। अब एक साथ कई मोर्चे पर आतंकवाद के खिलाफ कमर कसनी होगी, अब भारतीय सुरक्षा एजेंसियों का असली बड़ा काम यहां से शुरू करना होगा। अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सीमा पार यानी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से लड़ने में भारत का साथ देने का संकल्प एकबार फिर दोहराया है, इसी तरह रूस भी भारत के साथ है। अनेक देशों ने भारत की आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में हर तरह से सहयोग का वादा किया है। अब समय आ गया है पाकिस्तान को उसकी जमीन दिखाने एवं उसके विध्वसंक एवं विनाशकारी मनसूंबों को नेस्तनाबूंद करने का। तीन दशकों से कश्मीर घाटी दोषी और निर्दोषी लोगों के खून की हल्दीघाटी बनी रही है। लेकिन वर्ष 2014 के बाद से, नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से वहां शांति

एवं विकास का अपूर्व वातावरण बना है, यही पाकिस्तान को रास नहीं आ रहा है। कश्मीर सहित समूची दुनिया से आतंकवाद को समाप्त करने का नेतृत्व करके मोदी एक और करिश्मा घटित करने को तत्पर होना भी पाकिस्तान के लिये बड़ी चुनौती बना है, पहलगाव जैसी घटनाएं उनके इरादों को कमजोर नहीं, बल्कि बलशाली ही बनाती है। अब कश्मीर में आतंक का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला होना ही चाहिए। दुनिया के शक्तिसंपन्न राष्ट्र भी मंथन करें आतंक रूपी विष और विषमता को समाप्त करने का, शांतिपूर्ण दुनिया निर्मित करने का। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान में घूस कर सबक सिखाने का। सर्जिकल अटैक ही पुख्ता जबाव हो सकता है। आतंक से जो जन्मती है, वह संस्कृति नहीं होती है, उसमें पाशविकता होती है, उसमें जानवर विद्यमान होते हैं। ऐसे व्यक्ति, संगठन एवं देश किसी के प्रिय नहीं हो सकते, वे मानवता को त्राण नहीं, संत्रास देते हैं। लगातार हो रहे इन हमलों के बाद भी हिन्दू समुदाय शांति और करुणा की ही बात करता आया है। पर एक बड़ा सवाल ये है कि आखिर कब तक यह सिलसिला चलेगा?

ललित गर्ग

"सपने, शहादत, और सन्नाटा"

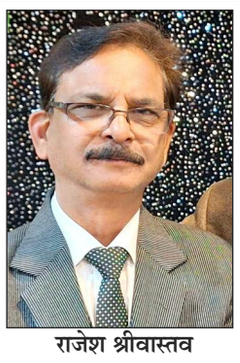

राजेश श्रीवास्तव

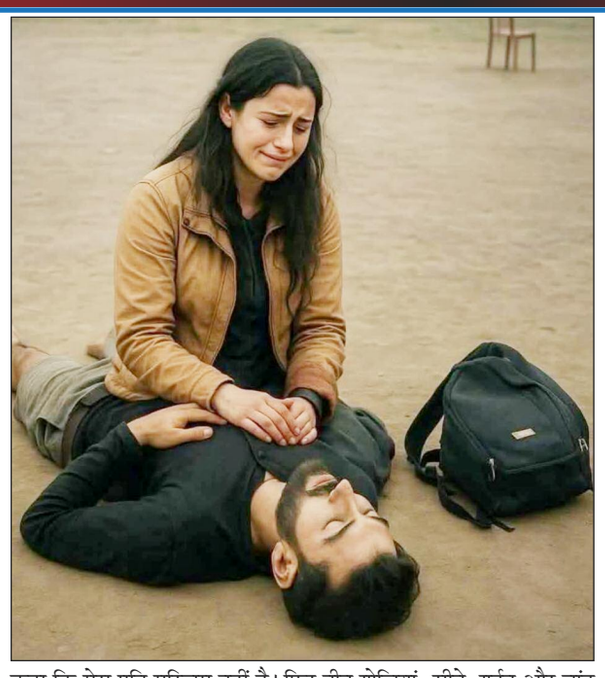

16 अप्रैल 2025 को मसूरी की पहाड़ियों में जब लेफ्टिनेंट विनय नरवाल और हिमांशी नरवाल ने सात फेरे लिए, तो हर कोई उनकी खुशियों से झूम रहा था। हरियाणा के करनाल से आए विनय और गुरुग्राम की हिमांशी की जोड़ी एक खूबसूरत सपने जैसी लग रही थी। परिवार, दोस्त, पूरा मोहल्ला इस पल को यादगार बना रहा था। लेकिन किसे पता था कि यह सपना महज छह दिनों में एक दुःस्वप्न में बदल जाएगा। विनय नरवाल, 26 साल के युवा और तेजतर्रार नौसेना अधिकारी, कोच्चि में तैनात थे। वे इंजीनियरिंग स्नातक थे, और उनके परिवार में देशसेवा की परंपरा पुरानी थी। पिता कस्टम विभाग में अधिकारी, दादा पुलिस से रिटायर्ड, और एक चचेरा भाई भी सेना में। विनय का सपना था–देश की सेवा और अपने प्यार के साथ जीवन बिताना। हिमांशी, गुरुग्राम की एक पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर युवती, जो पीएचडी कर रही थीं और बच्चों को पढ़ाती थीं। उनके पिता कराधान विभाग में अधिकारी थे। दोनों की सगाई 4 मार्च को हुई और शादी 16 अप्रैल को। करनाल और मसूरी के उत्सवों में जैसे दोनों परिवारों का सपना साकार हो रहा था। शादी के बाद यूरोप हनीमून की योजना बनी, लेकिन वीजा अड़चन आ गई। फिर उन्होंने कश्मीर का रुख किया–पहलगाम, जो "मिनी स्विट्जरलैंड" कहलाता है। 20 अप्रैल को हिमांशी के परिवार से मिले, 21 अप्रैल को कश्मीर रवाना हुए। जीवन का सबसे सुनहरा समय शुरू हो चुका था। 22 अप्रैल की दोपहर बैसरन घाटी में वो भेलपुरी खा रहे थे। खिलखिलाते हुए, कैमरे में लम्हे कैद कर रहे थे। तभी आतंक की परछाई उनके ऊपर टूट पड़ी। चार से छह आतंकी अचानक जंगलों से निकले और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने नाम और धर्म पूछे। विनय को सिर्फ इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि वह मुस्लिम नहीं थे। हिमांशी ने कांपती आवाज में कहा, ह्लहम भेलपुरी खा रहे थे... और उन्होंने

कहा कि मेरा पति मुस्लिम नहीं है। फिर तीन गोलियां–सीने, गर्दन और बांह में। विनय वहीं ढेर हो गए। हिमांशी उनकी लाश के पास बदहवास बैठी रहीं, चीखती रहीं, मदद मांगती रहीं। लेकिन वक्त थम गया था। 28 जानें चली गईं। दो विदेशी, एक खुफिया अधिकारी, और कई पर्यटक। घाटी खून से लाल हो चुकी थी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हमलावर सैन्य वर्दी में थे, और इस हमले के पीछे "द रेसिस्टेंट फ्रंट" का हाथ था–एक आतंकी संगठन जो लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन से जुड़ा है। सेना और सुरक्षा बल सक्रिय हुए। स्थानीय लोगों ने भी बहादुरी दिखाई–घायलों को पीठ पर लादकर, घोड़ों पर बिठाकर अस्पताल पहुंचाया। कुछ पर्यटकों को अपने घरों में पनाह दी। इंसानियत ने फिर से उम्मीद जगाई। 23 अप्रैल को विनय का पार्थिव शरीर दिल्ली लाया गया। हिमांशी, शोक में डूबी लेकिन मजबूत, ताबूत के पास खड़ी रहीं। उन्होंने कहा, ह्लहम हर दिन उन पर गर्व करेंगे ह्व उन्होंने ताबूत को प्रणाम किया, "जय हिंद" कहा, और देश की आत्मा को छू लिया। पूरा देश सिहर उठा। करनाल में विनय के घर में मातम छा गया। मां को अब तक नहीं बताया गया था कि बेटा चला गया है। बस कहा गया कि वो घायल है। दादा ने कहा, "उसका सपना था देश की सेवा करना... और उसने वही किया। हमले के बाद जांच तेज हुई। एनआईए ने मौके का मुआयना किया, चार संदिग्धों के स्केच जारी हुए। गृहमंत्री अमित शाह बैसरन पहुंचे, प्रधानमंत्री ने उच्चस्तरीय बैठक बुलाई, सुप्रीम कोर्ट ने मौन रखा। पूरा देश एक साथ खड़ा हो गया। दुनिया ने भी इसे बर्बरता कहा। अमेरिका, ब्रिटेन, इजरायल, फ्रांस–हर ओर से निंदा हुई। अमेरिकी उपराष्ट्रपति, जो भारत में थे, हिमांशी से मिले और संवेदना प्रकट की। इजरायल के प्रधानमंत्री ने कहा, भारत अकेला नहीं है। लेकिन यह हमला सिर्फ एक जोड़े की कहानी नहीं थी। यह आतंकवादियों की वह कोशिश थी, जिसमें वे कश्मीर की शांति, पर्यटन और साम्प्रदायिक सद्भाव को खत्म करना चाहते हैं। यह हमला कश्मीर की खूबसूरती और आतंक के उस अंतर्विरोध को उजागर करता है, जो दशकों से वहां जड़ें जमाए हुए है। हमले ने सवाल खड़े किए। खुफिया इनपुट थे, फिर चूक क्यों हुई? पर्यटक क्षेत्र में कोई सुरक्षा चौकी क्यों नहीं थी? घना जंगल, असुरक्षित रूट और आतंकी रेकी–सबकुछ सोची-समझी साजिश थी। और इसके बीच खड़ी है हिमांशी–टूटकर भी झुकी नहीं। विनय की शहादत को उन्होंने सिर्फ दुख नहीं, गौरव में बदला। उनका साहस, उनका प्रेम, और उनका संकल्प आज पूरे देश के लिए प्रेरणा है। यह कहानी हमें याद दिलाती है–देश की रक्षा सिर्फ सीमाओं पर नहीं होती, बल्कि प्रेम, बलिदान और एकजुटता से भी होती है। विनय और हिमांशी की कहानी अब सिर्फ दो लोगों की नहीं रही, यह पूरे भारत की आत्मा में बस चुकी है।

संक्षिप्त डायरी

मामूली झगड़े में तीन युवकों को मारा चाकू, दो की मौत

नई दिल्ली / भव्य खबर। उत्तर पश्चिमी जिले के आदर्श नगर स्थित सजी मंडी में दो पक्षों में मामूली बात को लेकर कहासुनी हो गई। झगड़े में आरोपित ने तीन लोगों पर चाकू से हमला कर दिया। वारदात को अंजाम देने के बाद वह मौके से फरार हो गया। मामले की सूचना मिलने पर मौके पर मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉ टरों ने दो को मृत घोषित कर दिया जबकि तीसरे का इलाज अभी जारी है। पुलिस ने घायल के बयान पर केस दर्ज किया है। फिलहाल पुलिस घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाल कर आरोपित की पहचान करने में जुटी हुई है। दरअसल, यह पूरा विवाद कूड़ा बीनने को लेकर हुआ। पुलिस के मुताबिक आबिद, कमल और अजमल कूड़ा इक्ा करके उसे बेचने का काम करते हैं। घायल आबिद के मुताबिक यह तीनों आदर्श नगर मेट्रो स्टेशन के पास कूड़ा इक्ा कर रहे थे। इसी दौरान फुटपाथ पर बैठे एक श स ने तीनों के साथ गाली-गलौज करना शुरू कर दिया और कूड़ा उठाने के एवज में पैसे की मांग की। तीनों ने विरोध किया, जिस पर गुस्साए आरोपित ने तीनों पर चाकू से हमला कर दिया। इस वारदात में कमल और अजमल की मौत हो गई और आबिद घायल हो गया। उार पश्चिमी जिले के डीसीपी भीष्म सिंह के अनुसार पुलिस को मंगलवार रात करीब 12.45 बजे अस्पताल से घटना की सूचना मिली। मौके पर पुलिस गई जहां घायल पीड़ित आबिद ने अपना बयान दिया। आदर्श नगर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल पुलिस आरोपित की पहचान करने में जुटी हुई है।

एमसीडी में डिजीलॉकर लागू, नागरिकों को मिलेगी डिजिटल सुविधा

नई दिल्ली / भव्य खबर। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) में बुधवार को डिजीलॉकर के साथ जन्म प्रमाणपत्रों के एकीकरण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक लागू किया गया। इस पहल के तहत अब नागरिकों को अपने बच्चे का जन्म प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए नगर निगम कार्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। प्रमाणपत्र सीधे डिजीलॉकर में उपलध होंगे, जिससे लोगों को समय और कागजी कार्रवाई से राहत मिलेगी। यहां जारी एक बयान में कहा गया है कि यह सुविधा सौ दिनों के 'विकसित दिल्ली कार्यक्रमइ के प्रस्ताव का भी एक अभिन्न हिस्सा है, जिसे अब प्रभावी रूप से लागू किया गया है। एमसीडी में किसी नवजात का जन्म पंजीकृत होता है, संबंधित प्रमाणपत्र स्वतः ही संबंधित नागरिक के डिजीलॉकर अकाउंट में अपलोड हो जाएगा। नागरिक अपने आधार नंबर या मोबाइल नंबर के माध्यम से डिजीलॉकर में लॉग-इन कर आसानी से इसे डाउनलोड कर सकते हैं। स्कूल में दाखिला, पासपोर्ट बनवाने, आधार पंजीकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में यह सुविधा लाभकारी सिद्ध होगी। एमसीडी अधिकारियों के अनुसार यह कदम डिजिटल इंडिया अभियान को सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा प्रयास है और इससे प्रशासनिक प्रक्रिया में पारदर्शिता और गति भी आएगी। यह सेवा न केवल सुविधाजनक है बल्कि प्रमाणपत्र की प्रमाणिकता भी सुनिश्चित करती है। इस पहल से नागरिकों की सुविधा में उल्लेखनीय सुधार होगा और सरकार की डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के प्रति प्रतिबद्धता और सुदृढ़ होगी। दिल्ली नगर निगम द्वारा जनता के बीच इस सुविधा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विशेष प्रचार अभियान भी चलाया जाएगा।

तीन मंजिला इमारत में लगी आग

नई दिल्ली / भव्य खबर। पश्चिमी जिले के कीर्ति नगर इलाके स्थित टि बर मार्केट में बुधवार दोपहर अचानक आग लग गई। मामले की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस व 10 दमकल गाडिड्ढ़ां मौके पर पहुंचीं। दमकलकर्मियों ने आधे घंटे के भीतर आग पर काबू पाया। घटना में किसी के हताहत होने कीकोई सूचना नहीं है। फिलहाल कूलिंग का काम जारी है।दमकल विभाग के अनुसार बुधवार दोपहर करीब 12.22 बजे दमकल कंट्रोल रूम को सूचना मिली कि कीर्ति नगर इलाके स्थित टि बर मार्केट में आग लग गई है। सूचना मिलते ही एक-एक कर 10 दमकल गाडिड्ढ़ों को मौके पर भेजा गया। दमकल अधिकारी के अनुसार आग तीन मंजिला इमारत की पहली व दूसरीमंजिल पर लगी थी। पहली और दूसरी मंजिल पर फर्नीचर का सामान रखा हुआ था। दमकलकर्मियों की टीम ने आधे घंटे के भीतर आग पर काबू पाया। घटना मेंकिसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। फिलहाल पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रही है।

मानहानि केस में मेधा पाटकर के खिलाफ गैरजमानती वारंट जारी

नई दिल्ली / भव्य खबर। उप-राज्यपाल वीके स सेना की ओर से दर्ज कराए गए 23 साल पुराने मानहानि के मामले में प्रोबेशन बॉन्ड जमा न करने पर साकेत स्थित सत्र न्यायालय ने बुधवार को सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर के खिलाफ गैर-जमानती वारंट (एनबीडब्ल्यू) जारी किया है। पाटकर ने हाईकोर्ट में प्रोबेशन बॉन्ड जमा करने की कार्रवाई पर दो सप्ताह तक रोक लगाने की याचिका लगाई थी, जिसे मंगलवार को कोर्ट ने अस्वीकार करते हुए ट्रायल कोर्ट जाने के निर्देश दिया था। बता दें कि वीके स सेना ने 23 साल पहले गुजरात में एक एनजीओ प्रमुख रहने के दौरान यह मामला दर्ज कराया था। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विशाल सिंह ने 70 वर्षीय पाटकर को मानहानि के मामले में दोषी ठहराया था और आठ अप्रैल को उन्हें अच्छे आचरण की परिवीक्षा पर रिहा कर दिया था। साथ ही उन पर एक लाख रुपये का जुमार्ना लगाने की शर्त भी रखी थी। 23 अप्रैल को मामला पाटकर की उपस्थिति, प्रोबेशन बांड जमा करने और जुमार्ना राशि जमा करने के लिए सूचीबद्ध किया गया था। वीके स सेना के वकील एडवोकेट गजिंदर कुमार ने कहा कि पाटकर न तो अदालत में पेश हुईं और न ही उन्होंने अदालत के निदेशों का पालन किया। इस मामले में दिल्ली पुलिस आयुक्त के माध्यम से पाटकर के खिलाफ एनबीडब्ल्यू (गैर जमानती वारंट) जारी किया गया है। कोर्ट ने पाया कि स्थगन की मांग करने के लिए दोषी द्वारा दायर आवेदन में पर्याप्त आधार नहीं है। गजिंदर कुमार ने कहा कि यदि दोषी तीन मई को सुनवाई की अगली तारीख तक अपने आदेश का पालन नहीं करता है, तो अदालत आठ अप्रैल को पारित उदार सजा को बदलने पर विचार करेगी।

पहलगाम हमले के बाद दिल्ली में बढ़ी सख्ती, भीड़भाड़ वाले इलाकों में तैनात की गई फोर्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद राजधानी दिल्ली में भी पुलिस हाई अलर्ट पर है। खास करके कुतुब मीनार, लाल किला, इंडिया गेट, पुराना किला, हुमायूं किला, लोटस टैंपल, अक्षरधाम, दिल्ली हाट, लोधी गार्डन इत्यादि टूरिस्ट प्लेस पर पुलिस की टीम ने सुरक्षा बढ़ा दी है।

इसके अलावा भीड़भाड़ वाले मॉल, बाजार पर भी पुलिस की चौकसी पहले से ज्यादा तेज कर दी है। इन जगहों पर जहां सबसे ज्यादा टूरिस्ट आते हैं, जो एंट्री पॉइंट है, जहां पर टिकट लेते हैं, उन जगहों पर भी सर्चिंग को पहले से बढ़ा दिया गया है। डीएफएमडी वाले गेट से लाल किला, कुतुब मीनार इत्यादि जगहों पर एंट्री सुनिश्चित की जा रही है। डीसीपी साउथ अंकित चौहान ने कुतुब मीनार सहित साउथ दिल्ली के महत्वपूर्ण इलाकों में सुरक्षा इंतजाम को और ज्यादा बढ़ाने के मामले को लेकर पुष्टि करते हुए बताया कि लगातार नजर बनाए हुए हैं।

दिल्ली के दूसरे इलाके जहां पर टूरिस्ट प्लेस नहीं है, लेकिन वहां मेट्रो स्टेशन, भीड़भाड़ वाले बाजार और माल इत्यादि हैं। वहां पर भी पुलिस की मौजूदगी ज्यादा नजर आ रही है। इसका जीता जागता उदाहरण देर रात बाहरी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और द्वारका इलाके की सड़कों पर भी देखने को मिला। जनकपुरी ईस्ट मेट्रो स्टेशन के नीचे तिलक नगर थाना की पुलिस टीम बैरिकेड लगाकर सड़क पर अलर्ट नजर आई और वहां से गुजरने वाली गाड़ियों पर निगरानी रखती हुई दिखाई पड़ी। जो कोई संदिग्ध नजर आ रहे थे, उनसे पूछताछ भी की जा रही थी। अमूमन इस तरह की चेकिंग 26 जनवरी, 15 अगस्त, दिवाली इत्यादि मौके पर दिखाई पड़ता है।दिल्ली की एकमात्र उपनगरी द्वारका में भी पुलिस हाई अलर्ट पर नजर आ रही है। यहां का सबसे मुख्य चौराहा द्वारका मोड़ पर जहां से रोजाना लाखों की संख्या में गाड़ियां और लोग गुजरते हैं। वहां आधी रात को दिल्ली पुलिस की टीम बैरिकेड लगाकर सड़क पर तैनात नजर आई और वहां से होकर गुजरने वाली गाड़ियों पर उनकी नजर थी। आम तौर पर यह अलर्टनेस 26 जनवरी, 15 अगस्त और दीपावली जैसे समय पर दिखाई पड़ता है। डीसीपी आउटर सचिन शर्मा ने बताया कि उनके जिले में भी पुलिस की टीम अलर्ट है और जहां-जहां पर जरूरी है, वहां पर अतिरिक्त सुरक्षा का भी इंतजाम किया गया है। बता दें कि पहलगाम में मंगलवार को हुए आतंकी हमले में 28 लोगों की मौत हो गई थी, जबकि 24 से अधिक घायल हो गए। मृतकों में इजरायल व इटली के दो विदेशी पर्यटकों के साथ देश के अन्य राज्यों के सैलानी और स्थानीय लोग भी शामिल हैं।

इससे पहले भी हुआ था पहलगाम में हमला

इसके पहले दो अगस्त, 2000 को आतंकियों ने पहलगाम में ही अमरनाथ श्रद्धालुओं पर हमला किया था, जिसमें 32 लोग मारे गए थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बैसरन में कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात सहित कई राज्यों से पर्यटक पहुंचे थे।

वहीं, एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि हम सभी घूम रहे थे। कुछ वहां बने एक खुले रेस्तरां में भोजन कर रहे थे। अचानक गोलियों की आवाज गूंजी और अफरातफरी फैल गई। हमलावर आतंकियों की संख्या तीन से चार थी। गोलियां चलाने वाले घूम-घूमकर करीब से गोली मार रहे थे।

100 साल में पहली बार डीयू में लगा हेल्थ मेला

-150 व्यक्तियों ने उठाया स्वास्थ्य जांच और परामर्श का लाभ

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी सर्विस (डबल्यूयूएस) दिल्ली यूनिवर्सिटी कमेटी (डीयूसी) द्वारा बीएलके-मैक्स अस्पताल के सहयोग से बुधवार को डीयू के एग्जाम विंग में स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। ÷आपका स्वास्थ्य, हमारी प्राथमिकता÷ के थीम पर आयोजित इस स्वास्थ्य मेले में निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं और विशेषज्ञ परामर्श प्रदान किए गए। डबल्यूयूएस डीयूसी के चेयरपर्सन प्रो. गुरप्रीत सिंह टुटेजा ने बताया कि डीयू के 100 साल के इतिहास में पहली बार ऐसे स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया है। स्वास्थ्य मेले का शुभारंभ डीयू कुलसचिव डॉ. विकास गुप्ता ने किया। इस अवसर पर उन्होंने आयोजक टीम से विस्तृत जानकारी भी ली। डॉ. विकास गुप्ता ने कहा कि यह डबल्यूयूएस की एक सराहनीय पहल है। मेले के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे डीयू कल्चर काउंसिल के चेयरपर्सन एवं पीआरओ अनूप लाठर ने मेले के आयोजन में अपनी महती भूमिका निभाने वाले सभी स्वयंसेवकों को सम्मानित किया। अनूप लाठर ने कहा कि इस तरह के आयोजन डीयू के अन्य विभागों में भी होने चाहिए। प्रो. गुरप्रीत सिंह टुटेजा ने बताया कि इस स्वास्थ्य मेले में बीएलके-मैक्स अस्पताल के शीर्ष पेशेवरों द्वारा करीब 150 व्यक्तियों को व्यापक स्वास्थ्य जांच और परामर्श प्रदान किए गए। इन में एग्जाम विंग व प्रशासनिक विंग के लोग भी शामिल थे। उन्होंने बताया कि इस मेले में रक्त परीक्षण (सीबीसी, एचबीए1सी, लिपिड, थायराइड, कोलेस्ट्रॉल), दंत जांच, नेत्र परीक्षण, सामान्य चिकित्सक से परामर्श, फुफ्फुसीय फेफड़े की जांच, ईसीजी, पैप स्मीयर टेस्ट, स्तन कैंसर की जांच, मौखिक कैंसर की जांच और अस्थि घनत्व परीक्षण आदि जैसे टेस्ट किए गए।

पहलगाम आतंकी हमला: सीएम रेखा गुप्ता ने दी शहीद हुए भारतीय नौसेना के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हुए भारतीय नौसेना के लेफ्टिनेंट विनय नरवाल का पार्थिव शरीर बुधवार को दिल्ली पहुंचा। इस दौरान दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने श्रद्धांजलि दी। वहीं, सीएम रेखा गुप्ता ने लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी हिमांशी को गले से लगाकर ढांढस बंधाया। विनय और हिमांशी के परिवार वाले भी भावुक हो गए।

वहीं, पत्नी हिमांशी ने अपने पति को भावभीनी विदाई दी। इस दौरान हिमांशी को देखकर हर किसी की आंखें नम हो गईं। दोनों की शादी 16 अप्रैल को ही हुई थी। बताया गया कि दोनों हनीमून मनाने के लिए जम्मू गए थे। लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी हिमांशी ने रोते हुए कहा कि वो जहां भी रहे खुश रहें, मैं हमेशा वो काम करूंगी जिस पर उन्हें मुझ पर गर्व हो।

नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। लेफ्टिनेंट विनय नरवाल कल पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हो गए थे। उनके पार्थिव शरीर को हरियाणा के करनाल ले जाया जाएगा।

बता दें कि जम्मू में आतंकियों ने मंगलवार दोपहर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम के बैसरन की वादियों में सुकून के पल बिताने आए पर्यटकों को घूम-घमकर करीब से गोलियां मारीं। इसमें 28 लोगों की मौत और 24 से अधिक घायल हो गए। मृतकों में इजरायल व इटली के दो विदेशी पर्यटकों के साथ देश के अन्य राज्यों के सैलानी और स्थानीय लोग भी शामिल हैं।

पहलगाम आतंकी हमला : दिल्ली की सीएम के सार्वजनिक कार्यक्रम दो दिन के लिए स्थगित

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पूरा देश शोक में डूबा हुआ है। आतंकी हमले की निंदा करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अपने कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। सीएम रेखा गुप्ता ने बुधवार को अपने एक्स हैंडल पर एक पोस्ट में कहा, 'जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए कायरतापूर्ण आतंकवादी हमले में शहीद नागरिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, दिनांक 23 अप्रैल एवं 24 अप्रैल को आयोजित होने वाले समस्त सार्वजनिक कार्यक्रमों को मैं स्थगित करती हूं।' इससे पहले उन्होंने दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंचकर मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले से पूरा देश आहत और आक्रोशित है। सीएम ने पोस्ट किया, 'आज इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पर पहुंचकर, पहलगाम आतंकी हमले में शहीद हुए भारतीय नौसेना के वीर अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।' मुख्यमंत्री ने कहा कि यह देश उनके बलिदान को कभी नहीं भूलेगा। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें और उनके परिजनों को यह अपार दु:ख सहने की शक्ति दें। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपना कानपुर का दौरा रद्द कर दिया। वह गुरुवार को कानपुर में एक सभा को संबोधित करने वाले थे, जहां से कई विकास परियोजनाओं का ऐलान होना था। बता दें कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम इलाके के बैसरन घाटी में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई और कई घायल हो गए। यह जगह श्रीनगर से लगभग 30 मील दूर एक पर्यटन स्थल है। इस घिनौनी आतंकी हमले की देश-विदेश में कड़ी निंदा हो रही है। जम्मू-कश्मीर सरकार ने पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए मुआवजे का ऐलान किया है। राज्य सरकार ने मृतकों के परिजनों के लिए 10 लाख रुपए और घायलों के लिए 2 लाख रुपए की अनुग्रह राशि देने का ऐलान किया है। वहीं, मामूली रूप से घायलों को 1 लाख रुपए की आर्थिक मदद की घोषणा की गई है।

इस्लाम में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है: मौलाना अरशद मदनी

-इस्लाम में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है : मौलाना अरशद मदनी मुस्लिम संगठनों ने इस कृत्य की निंदा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि हम इस दुखद घटना में मारे गए लोगों के परिजनों के साथ गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए दुआ करते हैं। बेगुनाहों की हत्या करने वाले इंसान नहीं, बल्कि दरिंदे हैं। इस्लाम में आतंकवाद की कोई गुंजाइश नहीं है। आतंकवाद एक ऐसा नासूर है जो इस्लाम की शांति-प्रिय नीति के विपरीत है, और इसके खिलाफ आवाज उठाना हर सच्चे मोमिन (ईमानदार मुसलमान) का फर्ज है। जमीयत उलमा-ए-हिंद विशेष रूप से धर्म के नाम पर किए गए आपराधिक कृत्य को देश और समाज की शांति एवं स्थिरता के लिए अत्यंत घातक मानती है। मौलाना मदनी ने आगे कहा कि इस दर्दनाक घटना को सांप्रदायिक रंग देना सरासर गलत है। मरने वालों में एक मुस्लिम नागरिक भी शामिल है, और जो खबरें सामने आ रही हैं, उनके अनुसार हमले के दौरान स्थानीय लोगों ने अपनी जान जोखिम में डालकर कई पर्यटकों को बचाया और घायलों को अस्पताल पहुंचाया। घटनास्थल पर कुछ समय तक कोई आधिकारिक सहायता नहीं मिली, और न ही कोई वाहन उपलब्ध था। ऐसे समय में आम कश्मीरियों ने अपने घरों से बाहर निकलकर इंसानियत की मिसाल कायम की और बिना किसी के धर्म की परवाह किए, हर घायल की मदद की। इस घटना ने कश्मीर के आम लोगों को झकझोर कर रख दिया है। वे गहरे दुख और गुस्से में हैं, जिसका इजहार उन्होंने जगह-जगह मशाल जुलूस निकालकर किया है। यह स्पष्ट संकेत है कि आम कश्मीरी शांति, एकता और विकास चाहता है तथा किसी भी तरह की कट्टरता को स्वीकार नहीं करता। वहीं जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी ने भी इसकी निंदा की है। इस घटना को 'निर्मम और अमानवीय करार देते हुए तत्काल न्याय और दोषियों को सख्त सजा देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ऐसा कृत्य न तो इंसानियत में विश्वास रखने वाले किसी समाज के लिए स्वीकार्य है और न ही किसी भी दृष्टिकोण से उचित ठहराया जा सकता है। जो लोग इस घिनौने अपराध में शामिल हैं, उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि कोई भी राजनीतिक या वैचारिक कारण ऐसी हिंसा को उचित नहीं ठहरा सकता। यह घटना न केवल अमानवीय है बल्कि नैतिक और धार्मिक मूल्यों के खिलाफ भी है उन्होंने कहा।

दिल्ली पुलिस ने ब्रिटेन के जाली वीजा से संबंधित मामले में पंजाब के ट्रैवल एजेंट को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस ने 2022 में एक यात्री के लिए फर्जी ब्रिटिश वीजा की व्यवस्था करने के मामले में पंजाब के 35 वर्षीय एक ट्रैवल एजेंट को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी।अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान पंजाब के कोटकपुरा निवासी अमित भारद्वाज उर्फ गवी के रूप में हुई है।उन्होंने कहा कि भारद्वाज ने यात्री को 12 लाख रुपये में अपने सहयोगियों की मदद से संयुक्त अरब अमीरात के रास्ते ब्रिटेन भेजने का प्रबंध करने का आश्वासन दिया था। हालांकि, यह योजना उस समय विफल हो गई जब हरियाणा के यात्री अनिल (25) को संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह के लिए आव्रजन मंजूरी के दौरान दिल्ली हवाई अड्डे पर रोक लिया गया। जांच करने पर, अनिल के पासपोर्ट पर लगा वीजा फर्जी पाया गया, जिसके बाद अधिकारियों ने 1 मार्च, 2022 को भारतीय दंड संहिता और पासपोर्ट अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान अनिल ने खुलासा किया कि उन्होंने ब्रिटेन के वीजा और नौकरी के लिए भारद्वाज तथा उसके सहयोगियों को 12 लाख रुपये का भुगतान किया था।पुलिस के अनुसार, भारद्वाज और दो अन्य एजेंट करणजीत सिंह तथा गुरमीत सिंह ने फर्जी वीजा का इंतजाम किया था। इस मामले में करणजीत और गुरमीत को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। दोनों की गिरफ्तारी के बाद भारद्वाज का नाम मुख्य बिचौलिए के रूप में सामने आया। गिरफ्तारी के कई प्रयासों के बावजूद, वह बचता रहा, जिसके कारण उसके खिलाफ़ गैर-जमानती वारंट के तहत कार्रवाई की गई।

चाकू की नोंक पर कैब ड्राइवर से लूटपाट करने वाले तीन बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। बुराड़ी थाना पुलिस की टीम ने चाकू की नोक पर कैब चालक से लूटपाट करने वाले तीन बदमाशों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से लूटा गया मोबाइल फोन और वारदात में इस्तेमाल चाकू व मोटरसाइकिल बरामद कर ली गई है।आरोपी अपनी गर्लफ्रेंड को महंगे गिफ्ट देने और नशे की लत पूरी करने के लिए लूटपाट करते थे। बदमाशों की पहचान मुकुंदपुर निवासी विकास, कृष्ण और अविनाश के रूप में हुई है। डिप्टी कमिश्नर राजा बांठिया के मुताबिक, 20 अप्रैल की देर रात बुराड़ी निवासी नुकुल जो पेशे से कैब ड्राइवर है, बुराड़ी चौक पर पैसेंजर का इंतजार कर रहा था। इसी दौरान करीब तीन बजे मोटरसाइकिल पर तीन युवक आए और उसका मोबाइल फोन छीनने की कोशिश की। जब उसने विरोध किया तो उन्होंने उसके हाथ पर चाकू से वार किया और उसका मोबाइल फोन लूटकर फरार हो गए। कैब ड्राइवर ने अपनी कार से उनका पीछा किया और उनकी मोटरसाइकिल को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे वे सड़क पर गिर गए। उन्होंने एक युवक को पकड़ लिया, जिसकी पहचान बाद में विकास के रूप में हुई, लेकिन दो अन्य लड़के मौके से भागने में कामयाब हो गए और मोटरसाइकिल वहीं छोड़ गए। उनकी निशानदेही पर अन्य दो बदमाशों को जहांगीरपुरी इलाके से गिरफ्तार कर लिया गया।

सजा में संशोधन करने संबंधी उच्च न्यायालय की प्रक्रिया पूरी तरह से अस्वीकार्य: उच्चतम न्यायालय

नई दिल्ली (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कहा कि तीन व्यक्तियों की दोषसिद्धि की समीक्षा और उसमें संशोधन को लेकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की ओर से अपनाई गई प्रक्रिया ''पूरी तरह से अस्वीकार्य'' है। इसके साथ ही न्यायालय ने संबंधित आदेश को खारिज कर दिया।

न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने पूर्ववर्ती दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 362 का हवाला दिया और कहा कि प्रावधान के अनुसार एक बार किसी मामले के निपटारे के लिए निर्णय और अंतिम आदेश पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद, किसी भी अदालत को लिपिकीय या अंकगणितीय त्रुटि को ठीक करने के अलावा उसमें बदलाव या समीक्षा करने का अधिकार नहीं है।

पीठ ने कहा, ''हम यह समझने में असफल रहे कि वर्तमान मामले में भी उच्च न्यायालय ने सीआरपीसी की धारा 362 के प्रावधानों में सरल और स्पष्ट शब्दों के इस्तेमाल के बावजूद ऐसी गलती कैसे कर दी।''

उच्चतम न्यायालय का यह फैसला मामले के शिकायतकर्ता द्वारा उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए दायर अलग-अलग अपीलों पर आया है। एक आरोपी ने बरी किये जाने के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

पीठ ने कहा कि उच्च न्यायालय ने इस मामले में मई, 2018 में दिये गये अपने फैसले में तीनों आरोपियों द्वारा दायर अपीलों को खारिज कर दिया था। उच्च न्यायालय के समक्ष आरोपियों ने निचली अदालत के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या के अपराध में दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

फरवरी 2019 में, उच्च न्यायालय ने आरोपी व्यक्तियों की याचिका पर मई 2018 के अपने फैसले को संशोधित किया था और उनकी सजा को आईपीसी की धारा 304, भाग-दो के तहत कमतर आरोप में बदल दिया।

आईपीसी की धारा 304, भाग-दो गैर-इरादतन हत्या से संबंधित है। इसके बाद उच्च न्यायालय ने उनमें से एक को 10 साल, जबकि बाकी को पांच-पांच साल जेल की सजा सुनाई गई। उच्च न्यायालय ने मई, 2018 के फैसले में आरोपियों की दलील को खारिज कर दिया था और हत्या के लिए उनकी दोषसिद्धि की पुष्टि की थी।

उच्चतम न्यायालय ने कहा कि उच्च न्यायालय ने अपने फरवरी 2019 के आदेश में पाया था कि यह घटना अचानक उकसावे का परिणाम प्रतीत होती है और उनकी सजा को आईपीसी की धारा 304 के भाग-दो में बदल दिया।

शिकायतकर्ता द्वारा दायर अपीलों को स्वीकार करते हुए पीठ ने कहा, ''आठ फरवरी, 2019 का निर्णय और आदेश रद्द किया जाता है क्योंकि उच्च न्यायालय द्वारा 21 मई, 2018 को दिये गये अपने ही निर्णय और आदेश की समीक्षा करना उचित नहीं था।'' यह बात सामने आई थी कि दो परिवारों के बीच लंबे समय से भूमि विवाद था और आरोपी व्यक्तियों ने एक

व्यक्ति पर हमला किया था, जिसकी मई 2012 में मृत्यु हो गई थी।

संक्षिप्त डायरी

बसपा को बड़ा झटका, कांग्रेस में शामिल हुए वरिष्ठ नेता मोहम्मद जफर खान

सुलतानपुर/ भव्य खबर। वरिष्ठ राजनेता और बहुजन समाज पार्टी के पूर्व नेता मोहम्मद जफर खान ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली है। लखनऊ स्थित उत्तर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित समारोह में उन्होंने औपचारिक रूप से कांग्रेस का दामन थामा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और राष्ट्रीय सचिव एवं यूपी प्रभारी अविनाश पांडेय ने उन्हें पार्टी का पटका पहनाकर सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा और शहर अध्यक्ष शकील अंसारी समेत कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। मोहम्मद जफर खान पिछले 26 वर्षों से बसपा में सक्रिय थे। उन्होंने बसपा में मंडल कोऑर्डिनेटर, जिला संयोजक और जिला उपाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। जनपद में उनकी सभी वर्गों में मजबूत पकड़ मानी जाती है।कांग्रेस ने इस राजनीतिक घटनाक्रम को एक सशक्त संदेश के रूप में देखा है। पार्टी के अनुसार यह आगामी चुनावों की रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जफर खान के कांग्रेस में शामिल होने से जनपद की राजनीति में नए समीकरण बन सकते हैं।

रास्ते के विवाद में हिंसक झड़प, पथराव में 5 वर्षीय बच्ची गंभीर रूप से घायल,लखनऊ रेफर

सुलतानपुर/ भव्य खबर। धम्मौर थाना क्षेत्र के बहादुरपुर तकिया गांव में बुधवार शाम रास्ते के विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट और पथराव हुआ, जिसमें 5 साल की बच्ची गौरी और उसके पिता सोनू कुमार घायल हो गए। बच्ची की हालत गंभीर होने के चलते उसे राजकीय मेडिकल कॉलेज से लखनऊ रेफर किया गया है। घायल पिता सोनू कुमार ने बताया कि वह किसी अन्य रास्ते से घर लौट रहे थे, जब विवाद होते देख बीच-बचाव करने की कोशिश की। इसी दौरान मोकम्म और उसका बेटा सलमान समेत अन्य लोगों ने उन पर हमला कर दिया। पथराव में उनकी बच्ची भी बुरी तरह घायल हो गई। बच्ची की मां रेनू देवी ने बताया कि उनका विवाद से कोई लेना-देना नहीं था, फिर भी अचानक उनके परिवार को निशाना बनाया गया। सीओ सिटी प्रशांत सिंह ने बताया कि यह महज रास्ते को लेकर हुआ विवाद है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग इसे धार्मिक रंग देने की कोशिश कर रहे हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। पुलिस मौके पर मौजूद है, स्थिति नियंत्रण में है और मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। गांव में तनाव के मद्देनजर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती भी की गई है।

हमीरपुर की कुरारा नगर पंचायत अध्यक्ष आशारानी कबीर ने विधान परिषद सदस्य की पुत्री की शादी में पहुंचकर दिया आशिर्वाद

हमीरपुर/ भव्य खबर। उत्तर प्रदेश हमीरपुर के कुरारा नगर पंचायत अध्यक्ष आशारानी कबीर विधान परिषद सदस्य मानवेंद्र सिंह चौहान की सुपुत्री के शुभ विवाह समारोह में शामिल होने कानपुर पहुंची, इस मौके पर कुरारा नगर पंचायत अध्यक्ष आशा रानी कबीर ने वर वधु को आशिर्वाद देकर उनके सफल जीवन की कामना की, साथ ही नवविवाहित जोड़े को हार्दिक बधाई और सुखमय वैवाहिक जीवन की ढेर सारी शुभकामनाएं दीं, कार्यक्रम मे विधान सभा अध्यक्ष सतीश महाना, प्रदेश संगठन महामंत्री धर्म पाल सिंह सहित कैबिनेट मंत्री राकेश सचान मौजूद रहे।

सीएम योगी की पहल पर इको फ्रेंडली डिजिटल विज्ञापन को प्रोत्साहन

लखनऊ।/ भव्य खबर/ रमण श्रीवास्तव । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में नगर विकास विभाग ने नई विज्ञापन नीति-2025 का मसौदा तैयार किया है। जिसे शीघ्र ही कैबिनेट के सामने प्रस्तुत किया जाएगा। नगर विकास विभाग के संबंधित अधिकारियों ने समीक्षा बैठक में बताया कि प्रदेश की नई विज्ञापन नीति में डिजीटल और इलेक्ट्रानिक साइनेज के माध्यम से विज्ञापन प्रसारण को बढ़ावा दिया जाएगा। इसके तहत क्रमिक रूप से प्रदेश के सभी जिलों में डिजीटल और इलेक्ट्रानिक साइनेज स्थापित किये जाएगें और नियमावली के अनुरूप विज्ञापन प्रसारण किया जाएगा। इससे एक ओर विभाग की राजस्व आय में वृद्धि होगी तो दूसरी ओर ये पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करने और शहरों को स्वच्छ, सुंदर और ईको फ्रेंडली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।नगर विकास विभाग राजस्व में वृद्धि और नगर निगमों के कार्यों में एकरूपता लाने के लिये नई विज्ञापन नीति-2025 तैयार की है। सीएम योगी के मार्गदर्शन में बनी नई विज्ञापन नीति पूरे प्रदेश में डिजिटल और इलेक्ट्रानिक साइनेज से विज्ञापन को बढ़ावा देगी। जिसका मुख्य उद्देश्य विभाग की राजस्व प्राप्तियों में वृद्धि करना और खर्च को कम करना है। नगर विकास विभाग ने समीक्षा बैठक में बताया कि विभाग ने विज्ञापन से होने वाली आय में आगामी पांच वर्ष में सौ फीसदी वृद्धि का लक्ष्य रखा है। वर्ष 2024-25 में विभाग को जहां विज्ञापन से 78.9 करोड़ रुपये की आय प्राप्त हुई है जिसे वर्ष 2029-30 तक 158.7 करोड़ रुपये की आय का अनुमान व्यक्त किया है। संबंधित अधिकारी ने बताया कि डिजीटल और इलेक्ट्रानिक साइनेज व होर्डिंगस के माध्यम से विज्ञापन करने से होर्डिंग, पेंटिग, फ्लेक्स, फ्रेम, लाइटिंग आदि के खर्च में कमी आएगी। साथ ही विज्ञापन प्रसारण की नई नियमावली और रेट सूची राजस्व प्राप्ति में वृद्धि लाएगी। डिजीटल व इलेक्ट्रानिक होर्डिंग्स के माध्यम से विज्ञापन प्रसारण प्रदेश के नगरों को सुंदर, स्वच्छ और इको फ्रेंडली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाएगा। परांपगत तरीके से बिलबोर्डस, होर्डिंग्स, पोस्टर के माध्यम से विज्ञापन प्रसारण कई तरह के केमिकल, नॉन- बायोडिग्रीडेबल कचरे को जन्म देता है, जो पर्यावरण को प्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाता है। फ्लेक्स होर्डिंग को बनाने में नॉन बायोडिग्रीडेबल सिंथेटिक पालीमर और कलर डाइ का प्रयोग होता है, जो पर्यावरणीय प्रदूषण को बढ़ाता है। जबकि डिजीटल और इलेक्ट्रानिक होर्डिंगस की एलईडी स्क्रीन से लगभग 70 प्रतिशत तक ऊर्जा की खपत तक कम होती है।

तलवार, त्रिशूल और फरसा लेकर पहुंचे प्रदर्शनकारी

पहलगाम के आतंकी हमले का लखनऊ में चौतरफा विरोध, संत बोले- यह धार्मिक लड़ाई है

लखनऊ। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले का लखनऊ में जोरदार विरोध किया जा रहा है। विभिन्न सामाजिक संगठनों, व्यापारियों और धर्मगुरु इसकी निंदा कर रहे हैं। हजरतगंज समेत शहर के विभिन्न इलाकों में पाकिस्तान का पुतला जलाया जा रहा है। लोग विरोध मार्च निकाल रहे हैं। लगातार इसके खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। विश्व हिंदू रक्षा परिषद ने पाकिस्तान का पुतला जलाया। अखिल भारतीय हिंदू महासभा ने घटना के विरोध में हजरतगंज स्थित गांधी प्रतिमा पर पुतला जलाया और विरोध किया। आदर्श व्यापारी एसोसिएशन इंदिरा नगर द्वारा सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया। पुराने लखनऊ में घंटाघर से रूमी गेट तक कैंडल मार्च निकाला गया।अखिल भारतीय हिंदू महासभा के बैनर तले हजरतगंज में हो रहे प्रदर्शन में प्रदर्शनकारी त्रिशूल, तलवार और फरसा लेकर पहुंचे हैं। बच्चे भगवा झंडा लेकर शामिल हुए हैं। प्रदर्शनकारी घटना को लेकर बहुत आक्रोशित हैं। पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी कर रहे हैं। देश को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की मांग कर रहे हैं। संत समाज भी लखनऊ में प्रदर्शन कर रहा है। सभी सरदार पटेल की प्रतिमा पर प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका कहना है कि यह धार्मिक लड़ाई है। अब धर्म युद्ध करना जरूरी हो गया है। विश्व हिंदू रक्षा परिषद के पदाधिकारी और कार्यकर्ता हजरतगंज जीपीओ पर कैंडल मार्च निकाल कर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

नवाब मसूद अब्दुल्ला और शिया धर्मगुरु मौलाना सैफ अब्बास ने लोगों से इस घटना के विरोध में आवाज उठाने की अपील की। आदर्श व्यापार मंडल मशाल जलाकर आतंकी घटना का विरोध कर रहा है।

व्यापारियों ने किया विरोधव्यापारियों ने हजरतगंज में आतंकवाद के पुतले को लात-घूसा चप्पल से पीटा। आतंकवाद के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस पर रोक लगाने के लिए प्रभावी कदम उठाने की मांग की। समाजवादी छात्र सभा के कार्यकर्ताओं ने परिवर्तन चौक पर कश्मीर के आतंकी हमले का विरोध किया। मृतकों को श्रद्धांजलि दी।उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल के पदाधिकारी जोरदार प्रदर्शन कर रहे हैं। व्यापारियों ने कहा कि मोदी हमला करो, हम आपके साथ हैं। प्रदर्शन कर रहे व्यापारी विधान सभा की ओर बढ़ रहे हैं।

आतंकी हमले के विरुद्ध

नपाअध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल के नेतृत्व में हुआ विरोध प्रदर्शन

संवाददाता
कुशीनगर।

कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के विरोध में नगरपालिका अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल के नेतृत्व में सभासदों एवं नगरवासियों ने विरोध प्रदर्शन कर कैंडिल जलाया। नगर के शहीद स्मारक पार्क से नपाप अध्यक्ष के नेतृत्व में निकले लोगों ने आतंकवाद मुदार्बाद का नारा लगाते शहीद मेजर अमिय त्रिपाठी चौक से होते हुए गांधी चौक जाकर पुनः शहीद पार्क आये। इस दौरान आतंकवाद मुदार्बाद के नारे लगाए गए। शहीद स्मारक पार्क में कैंडिल जलाकर इस घटना में मारे गए पर्यटकों की आत्मा की शांति की प्रार्थना की गई। यहां अध्यक्ष ने अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री से आतंकवादियों को जड़ से कुचलने की मांग की। इस दौरान केशव सिंह, मुन्ना शर्मा,राजेश मद्देशिया, पवन जायसवाल, टिंकू मिश्र, साबिर अली, शमशुल हक, राकेश यादव, गुड्डू कुशवाहा, अमेरिकन पटेल,बृजेश चौहान, श्याम चौहान, दुर्गेश शर्मा,विनय कुमार गौतम, स्वतंत्र कुमार,राजेश श्रीवास्तव, श्रवण तिवारी, उग्रसेन कुमार,राहुल सोनी,राधे यादव, ममता ,कंचन, संजय, रवि पांडेय, रिंकी यादव,हरिंदर यादव, संजय प्रकाश भारतीय, हरेंद्र जायसवाल सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

हमीरपुर की राठ पुलिस ने जुआरियों को एक लाख बारह हजार रुपये के साथ किया गिरफ्तार

संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की राठ पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़ के लिये चलाये जा रहे अभियान के तहत 8 अभियुक्तों को हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये 59 वर्षीय राजेन्द्र गुप्ता के मकान के अन्दर जलालपुर रोड़ से गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की। राठ पुलिस ने मौके से एक लाख बारह हजार रुपये के साथ ही ताश के बावन पत्ते बरामद करने में कामयाबी हासिल की। वही राठ पुलिस ने अभियुक्तों के खिलाफ मु0अ0सं0 182/2025 धारा 3/4 सार्वजनिक जुआ एकट के तहत मामला दर्ज किया गया है। पकड़े गये जुआरियों 50 वर्षीय धनपत सिंह पुत्र जगन्नाथ निवासी पठानपुरा राठ हमीरपुर, 33 वर्षीय मोहित कुमार पुत्र राजकुमार निवासी ग्राम कुल्हेडा मझगवां हमीरपुर, 45 वर्षीय नीरज कुमार पुत्र छविलाल निवासी बुधौलियाना राठ हमीरपुर, 55 वर्षीय सुरेश पुत्र रघुनाथ निवासी पठानपुरा राठ हमीरपुर, 26 वर्षीय अमरकान्त पुत्र किशन राजपूत निवासी ग्राम इटैलिया बाजा हमीरपुर, 35 वर्षीय दर्शन यादव पुत्र सुखराम निवासी ग्राम मगरौल जरिया हमीरपुर महेन्द्र पुत्र बृजेन्द्र निवासी ग्राम मगरौल जरिया हमीरपुर शामिल रहे। जुआरियों को गिरफ्तार करने वाली टीम में01. उ0नि0 विनेश गौतम, उ0नि0 मनोज पाण्डेय, का0 जितेन्द्र यादव का0 डेगराज , का0 अंशुल सिंह

पहलगाम में आतंकी हमले पर जताई चिंता, दी श्रद्धांजलि

अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर में युवाओं में परिचर्चा में लिया भाग

संवाददाता
कसया, कुशीनगर। वर्मी मंदिर कुशीनगर के धम्म हाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर में कुशीनगर में आए हुए देश के राज्यों और दुनिया से आए हुए युवाओं ने कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकियों द्वारा पर्यटकों की जघन्य हत्या पर गहरा शोक प्रकट किया। सभी ने दो मिनट का मौन रख उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। शिविर में पद्म श्री इंदिरा उदयना इंडोनेशिया ने कहा कि दुनिया में चारों तरफ हिंसा बढ़ रही है जो चिंता का विषय है। हमेंयुद्ध नहीं बुद्ध चाहिए। मुझे जंग नहीं अमन चाहिए। हिंसा नहीं शांति चाहिए। ट्रस्टी राष्ट्रीय युवा योजना डॉ आरसी गुप्ता, संस्थापक विवेकानंद युवा कल्याण केंद्र प्रदर्शन, डॉ सीबी सिंह, ट्रस्टी/ राष्ट्रीय सचिव हरिजन सेवक संघ नई दिल्ली संजय राय, नेपाल के आयुष कुमार, अजय पाण्डेय ने कहा कि धर्म के नाम पर, कहीं जाती के नाम पर, कहीं धर्म के नाम पर। खासकर धर्म के नाम पर जो हिंसा बढ़ रही है। वह बहुत ही चिंता का कारण है। भगवान बुद्ध की इस भूमि से ये नौजवान दुनिया से पूछना चाहते है कि ये हिंसा क्यों। धर्म तो हमें जोड़ता है तोड़ता नहीं। वह हमें प्रेम सिखाता है। नफरत नहीं। नौजवान कह रहा है। आज म्यांमार मंदिर के सभागार में स्वयंसेवकों ने समूह में परिचर्चा में भाग लिया युवाओं की भूमिका विषय पर अपने विचार रखे। इसके बाद अपनी अपनी प्रस्तुति दी। इस दौरान कार्यक्रम में सुरेश राठी, कुमुद रंजन सिंह,डॉ अश्विनी कुमार डेका, डॉ रघुवीर, डॉ हरजीत कौर, निकिता, शिवा परमार, गीता कौर, गुलाम, बैजनाश सिंह, अभिषेक सिन्हा, मयूर सायरे, सचिन सहित दो सौ स्वयंसेवक मौजूद रहे।

टीम वर्क से करे कार्य ताकि जनपद प्रदेश में रहे अग्रणी-सीएमओ

संवाददाता
कुशीनगर। जिलाक्षयरोग केंद्र के सभागार में बुधवार को मासिक समीक्षा बैठक मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ अनुपम प्रकाश भास्कर की अध्यक्षता में हुयी।

समीक्षा बैठक में जिला कार्यक्रम समन्वयक अनुपम मिश्र द्वारा टीबी कार्यक्रम के 9 बिंदुओं को विस्तारपूर्वक बताया गया जिसमें नोटिफिकेशन,डीबीटी,एचआईवी सुगर,यूडीएसटी,डीआरटीबी,बजट खर्च,टीपीटी,पीएलएचआईवी,सफलता दर आदि प्रमुख रहे।बैठक को सम्बोधित करते हुये जिलाक्षयरोग अधिकारी डॉ एस. एन. त्रिपाठी ने कहा कि हमारे सभी एसटीएस,एसटीएलएस एवं समन्वयको के परिश्रम से ही हमारा जनपद लगातार प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है जिसका परिणाम है कि जनपद का प्रदेश में छठवां स्थान है। जिसके लिये हमारे सभी कर्मचारी बधाई के पात्र है। डॉ त्रिपाठी द्वारा टीबी की समीक्षा बैठक में प्रथम आगमन पर सीएमओ सर को बुके देकर स्वागत किया गया। समीक्षा बैठक को सम्बोधित करते हुये सीएमओ डॉ एपी भास्कर ने कहा कि आप सभी टीम वर्क से कार्य करे तो जनपद प्रदेश में अग्रणी स्थान को प्राप्त करेगा। उन्होंने ने कहा कि छोटे छोटे इंडिकेटर पर ध्यान देते हुये हम अपने स्कोर को बढ़ा सकते है। डॉ भास्कर ने कहा कि आप सभी के कार्यों से प्रदेश में जनपद सम्मानजनक स्थान पर इसके लिये मैं सभी प्रसंशा के पात्र है। आप सभी अपनी ड्यूटी निष्ठापूर्वक करें ताकि हमारा टीबी स्कोर और अच्छा हो सके।इस दौरान नितेश राय,आशुतोष मिश्र,राजीव राय,कमलशंकर पांडेय,अरमान अहमद,अमित पांडेय,अमित राय,संजय द्विवेदी,अमित श्रीवास्तव,सत्येन्द्र पांडेय,निशांत मिश्र,राकेश राव,विवेक यादव,सन्तोष यादव,अमित वर्मा,धनन्जय पांडेय,आदित्य तिवारी,करन कुमार,विवेक चौधरी,अशोक यादव,विवेकानंद मिश्र,इसरार अली,राकेश कुमार सोनकर,रामप्रकाश गौतम,राकेश सिंह,दीपक दुबे,अनिल सिंह,राजा,प्रभु,वीरेंद्र आदि उपस्थित रहे।

लखनऊ में भीषण आग, 87 झोपड़ियां जलीं

लखनऊ। कौनसी खेड़ा में देर रात भीषण आग लग गई। 87 से अधिक झुग्गी-झोपड़ी धधकने लगीं। 2 किमी दूर से लपटें दिखाई दे रही थीं। सिलेंडर और बाइकों के पेट्रोल टैंक फटने से धमाकों से इलाका दहल उठा। आग की लपटें और चीख-पुकार सुनकर लोगों अपने घरों से बाहर निकल आए।। लोगों ने पहले पानी डालकर आग पर काबू पाने का प्रयास किया। आग बेकाबू होते देख दमकल को सूचना दी। सरोजनी नगर सीएफओ दो दमकल के साथ मौके पर पहुंचे। आग को देखते हुए शहर के सभी दमकल स्टेशन से गाड़ियां बुलाई गईं। 6 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद दमकल कर्मी आग पर पूरी तरह से काबू पा सके हैं। हादसा मंगलवार रात पौने तीन बजे बिजली के पोल में शॉर्ट सर्किट से हुआ। देखते ही देखते पूरी बस्ती खाक हो गई। रक्षड मंगेश कुमार 12 से अधिक दमकल गाड़ियों के साथ मौके पर डटे रहे। स्थानीय लोगों का कहना है कि बिजली विभाग की लापरवाही से हादसा हुआ है। तीन दिन पहले भी शार्ट सर्किट से आग लगी थी, लेकिन समय रहते बुझा ली गई थी। सरोजनी नगर एफएसओ के मुताबिक आग पूरी तरह बुझी गई है। आग से 87 से ज्यादा झोपड़ी जली हैं और 200 लोग प्रभावित हुए हैं।SFO मंगेश कुमार ने बताया- झुग्गी-झोपड़ियां सुबह तक सुलग रही थीं। सुबह पानी की बौछार कर आग को पूरी तरह काबू में किया गया। आग कनौसी रेलवे फाटक के पास रिटायर्ड रेलवे कर्मचारी रामबाबू की जमीन पर बनी झुग्गी-झोप(ड़ियों में लगी थी।SFO ने बताया- रेलवे ट्रैक से सटती जमीन पर ठेकेदार संजीव गुप्ता (8), अंशु बजाज (15) सुभाष (10) खुशी राम साहू (13) हातिम अली (15) हसमत अली (12) और जलील खान (14) ने झोपडियां किराए पर ले रखी थीं। इनमें असमिया मजदूरों को रखकर कूड़ा बिनवाने का काम करते थे। केसरी खेड़ा झुग्गी बस्ती में रहने वाली मीना के घर में सबसे पहले आग लगी। मीना ने बताया- हम लोग सो रहे थे। अचानक गर्मी बढ़ने से उठ गए। देखा तो झोपड़ी में आग लगी थी। बेटी सोनम, बेटा बबलू और पति को उठाया और बाहर को भागे।उन्होंने बताया- बाहर आकर शोर मचाया और आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन लपटें इतनी तेज थीं कि आग बहुत तेजी से फैल गई और दूसरी झोपड़ियों को चपेट में ले लिया।SFO मंगेश कुमार ने बताया- कनौसी खेड़ा झुग्गी बस्ती के पास स्थित शशि बाला और एचआर वशिष्ठ के मकान भी आग की चपेट में आ गए। घर के सामने लगे टाइल्स टूट गए, बाहर रखा सामान जल गया।

गिरिराज सिंह ने आर.जे.डी सुप्रीमो को दिया चैलेंज

बोले- लालू यादव के पास जुबान नहीं, हिम्मत है तो बिहार के विकास पर कर लें बहस

बेगूसराय। बीजेपी के सीनियर लीडर और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने राजद सुप्रीमो लालू यादव को विकास के मुद्दे पर बहस करने का चैलेंज दिया है। उन्होंने कहा है कि लालू यादव को विकास के मुद्दे पर बोलने का कोई हक नहीं है। इसके साथ ही मधुबनी में होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम को देश के विकास के लिए एक नया आयाम बताया है। बेगूसराय में पत्रकारों से बात करते हुए गिरिराज सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मानना है कि भारत को हम विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं। लेकिन पूर्वांचल के विकास के बगैर भारत विकसित राष्ट्र नहीं हो सकता है। पूर्वांचल का विकास करना है तो पूर्वांचल के मुख्य द्वार गेटवे ऑफ ईस्टर्न बिहार है।इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार में प्रोसेसिंग यूनिट की बात की। बिहार में मखाना की बात की, मखाना सेंटर खोलने की बात की। बिहार में नदियों पर 17 पुल देने की बात ही नहीं की, बल्कि पुल देने का काम किया है। जिस बेगूसराय से हम चार-चार घंटे में पटना पहुंचते थे, आज बरौनी थर्मल से पटना गोलघर डेढ़ घंटे में पहुंच रहे हैं।यह नरेंद्र मोदी के विकास का विजन है कि बिहार के विकास के बगैर पूर्वांचल का विकास नहीं हो सकता है। पूर्वांचल के विकास के बगैर देश का विकास नहीं हो सकता है। इसी को साकार करने के लिए चाहे वह बेगूसराय और भागलपुर आते हैं। कल प्रधानमंत्री मधुबनी आ रहे हैं, पूरा विश्वास है कि एक नया आयाम लिखा जाएगा। गिरिराज सिंह ने कहा कि आज तक दरभंगा में एम्स खुला था क्या, आज हर जिले में मेडिकल कॉलेज खुल रहा है। यह नीतीश कुमार और नरेंद्र मोदी की जोड़ी है। इसी विकास को सार्थक को बनाने के लिए नरेंद्र मोदी कल मधुबनी से अपने सभा को संबोधित करेंगे। इससे भारत के विकास में एक नया आयाम शुरू होगा।विपक्ष द्वारा नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम पर सवाल उठाने तथा जुमले बाजी कर जाने के सवाल पर कहा कि लालू यादव को मैं चुनौती पूर्ण करना चाहता हूं कि अगर आपको बिहार के विकास पर बहस करनी है तो कर लें। भारतीय जनता पार्टी या एनडीए के कार्यकताओं से लेकर जिससे चाहें बहस करें। जिसको कहें गांधी मैदान या फ्रेजर रोड में बहस कर सकते हैं। कभी आपने बिहार को लालटेन युग में पहुंचा दिया था, आज बिहार के बच्चों को बिजली मिल रहा है। 30 साल के बच्चों को याद नहीं होगा, यहां एक ही धंधा था फिरौती का धंधा। उनको तो जुमलेबाजी दिखेगा ही, 20 साल में नीतीश कुमार की सरकार, एनडीए की सरकार और 10 साल की मोदी और एनडीए की सरकार में बिहार के विकास में मिल का पत्थर रख दिया है। लालू यादव को जुबान नहीं है कि बिहार पर कुछ बोल सकें।

संक्षिप्त डायरी

3 बदमाशों ने फायरिंग कर की दहशत फैलाने की कोशिश

समस्तीपुर/ भव्य खबर। उजियारपुर थाना क्षेत्र के प्रेमब्रह्मडा गांव में मंगलवार शाम बाइक सवार तीन बदमाशों ने एक घर के सामने हवाई फायरिंग कर दहशत फैलाने की कोशिश की। घटना शाम करीब 8 बजे की है। गांव के बिनोद सिंह ने बताया कि इसी दिन पहले जमीनी विवाद को लेकर बदमाश पिस्टल लेकर आए थे, जिसका वीडियो भी सामने आया है।उजियारपुर थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि घटनास्थल से कोई खोखा नहीं मिला है, इसलिए मामला संदिग्ध लग रहा है। जिले में अवैध हथियारों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। मुंगेर से आने वाले कट्टे 3 से 5 हजार रुपए में बिक रहे हैं। देसी पिस्टल की कीमत 15 से 20 हजार रुपए है।एक संगठित गिरोह इस धंधे को चला रहा है। पिछले कुछ महीनों में कई गंभीर वारदातें हुई हैं। मार्च में मुसरीघरारी में कुत्ते पर गोली चली। जनवरी में बिथान के सिहमा गांव में ताश के विवाद में धर्मेंद्र कुमार की हत्या हुई।पिछले साल मोहिउद्दीननगर और मुफस्सिल में जमीनी विवाद में तीन लोग मारे गए और दो घायल हुए।अवैध हथियारों की बरामदगी और गिरोहों को किया जा रहा चिह्नितसूत्रों के अनुसार, जिले में कई जगह लोहे के काम की आड़ में मिनी गन फैक्ट्रियां चल रही हैं। सिंघिया थाना क्षेत्र में एक ऐसी फैक्ट्री का भंडाफोड़ हुआ और हथियार बनाने के उपकरण जब्त किए गए। इससे पहले हसनपुर ताजपुर बंगरा में भी एक फैक्ट्री पकड़ी गई।एएसपी संजय पांडे ने बताया कि अवैध हथियारों की बरामदगी की जा रही है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर हथियार तस्करी करने वाले गिरोहों को चिह्नित किया जा रहा है।

'पत्नी से तंग आ गया हूं, मुझे मरने दो

भागलपुर/ भव्य खबर। अबाबाग लेन में रहने वाले शैलेंद्र ने पत्नी के अफेयर से परेशान होकर आत्मदाह की कोशिश की है। बुधवार को दोपहर के समय कचहरी चौक पर खुद के शरीर पर पेट्रोल छिड़क लिया। लेकिन आग लगाने से पहले मौके मौजूद पुलिसकर्मियों ने उसे बचा लिया। किसी तरह से समझा-बुझाकर उसे शांत कराया।शैलेंद्र ने पत्नी पर आरोप लगाते हुए कहा कि वो मुझे जेल भिजवा देगी। मैं कोर्ट-कचहरी के चक्कर से तंग आ गया हूं। मेरे साथ नहीं रहना चाहती। कम से कम मुझे मेरे बच्चों को सौंप दें। अब मैं झेल नहीं पाऊंगा, मुझे मरने दो।शैलेंद्र ने बताया कि 2011 में प्रियंका से शादी हुई थी। कुछ सालों तक सबकुछ ठीक चला। तीन बच्चे भी हुए। 13 और 11 साल के दो लड़के हैं, जबकि 9 साल की एक बेटी है। मैं रेलवे में प्राइवेट एजेंसी की ओर से स्वीपर का काम करता था। ज्यादा सैलरी नहीं थी। पत्नी बार-बार पैसों की डिमांड करती थी। इसको लेकर अक्सर झगड़ा भी होता था। बाद में प्रियंका ने घरेलू प्रताड़ना का आरोप लगाकर मुझे जेल भिजवा दिया।''दो साल पहले सितंबर 2023 में प्रियंका घर से ज्वेलरी और कैश लेकर फरार हो गई थी। बाद में कोर्ट में तलाक का केस भी फाइल कर दिया। दो साल से कोर्ट में केस चल रहा है। अब मेरी पत्नी और उसके प्रेमी की ओर से लगातार मुझे धमकाया जा रहा है।'2 दिन पहले हुआ था हाई वोल्टेज ड्रामा सोमवार को शैलेंद्र अपनी पत्नी प्रियंका को मानने कोर्ट पहुंचे थे। इस दौरान प्रियंका के साथ उसकी मां भी आई थी। सास शैलेंद्र को देखते ही भड़क गई थी। दोनों ने जमकर हंगामा किया था। प्रेमी की पहचान कमल उर्फ छोटू पासवान के रूप में हुई है।

5 बदमाशों ने सोने की चेन-अंगूठी और मोबाइल लूटा

सीवान/ भव्य खबर। महराजगंज में अपराधियों ने दिनदहाड़े तेघरा पैक्स अध्यक्ष को लूट लिया। घटना महराजगंज थाना क्षेत्र के आकाशीमोड़ के पास की है। पीड़ित अमरेश कुमार गौतम बंगरा के रहने वाले हैं।अमरेश कुमार ने बताया कि वे अपने घर से महराजगंज जा रहे थे। आकाशीमोड़ के पास दो बाइक पर सवार पांच बदमाश पहले से घात लगाए हुए थे। अपराधियों ने उनके शरीर पर हथियार सटा दिया। उन्होंने धमकी दी कि चेन, अंगूठी और मोबाइल दे दो, नहीं तो गोली मार देंगे।सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस जान जाने के डर से पीड़ित ने बिना शोर मचाए सोने की अंगूठी, चेन और मोबाइल दे दिया। बदमाश बाइक की चाबी भी निकालकर महराजगंज की तरफ भाग गए। घटना पीड़ित के घर से महज 200 मीटर की दूरी पर हुई। अपराधियों के भागने के बाद स्थानीय लोगों को घटना की जानकारी मिली।स्थानीय लोगों की मदद से पीड़ित थाने पहुंचे। उन्होंने लिखित शिकायत दर्ज कराई है। घर के पास हुई इस लूट की घटना से परिवार में दहशत का माहौल है। महराजगंज थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

घर से बाहर निकलते ही ट्रैक्टर ने रौंदा, मौत

छपरा/ भव्य खबर। भगवान बाजार थाना क्षेत्र में सड़क हादसे में बुजुर्ग की मौत हो गई है। बरहमपुर डी के पास बेकाबू बालू लदे ट्रैक्टर ने राहगीर जमाल खान को कुचल दिया। जमाल खान की मौके पर ही मौत हो गई। वो अपने घर से बाहर जाने के लिए निकले थे। घटना के बाद स्थानीय लोग और परिजन घायल को छपरा सदर अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मौत की पुष्टि के बाद परिजनों में आक्रोश फैल गया। भगवान बाजार थाना की पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है।फरार चालक की तलाश में जुटी पुलिसथाना अध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने बताया कि घटना अजबगंज इलाके की है। तेज गति और लापरवाही से चल रहे बालू लदे ट्रैक्टर की टक्कर से यह हादसा हुआ।

डॉक्टरों की कथित लापरवाही से नवजात की मौत

बांका। के एक निजी क्लीनिक में मंगलवार को इलाज के दौरान तीन दिन के नवजात शिशु की मौत हो गई। परिजनों ने डॉक्टरों पर लापरवाही और मोटी रकम वसूलने का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। यह घटना रजौन थाना क्षेत्र के भुसिया रोड स्थित एक निजी क्लीनिक की है। नवजात बच्चे की मौत के बाद स्वास्थ्य व्यवस्था पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं।मृतक नवजात के पिता पवन कुमार यादव भागलपुर के थाना लोदीपुर के चौधरी डीह गांव के निवासी हैं। पुलिस को दिए गए आवेदन में पिता ने बताया कि उनकी पत्नी पूजा देवी गर्भवती थी और प्रसव के लिए रजौन के अंग नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया। 19 अप्रैल को डॉक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी, जिसके बाद बच्चे का जन्म हुआ। डॉक्टरों ने नवजात की स्थिति गंभीर बताई और उसे पास के एक चाइल्ड अस्पताल के शिशु इकाई में रखने की बात कही। इलाज के दौरान डॉक्टरों ने कुल ढाई लाख रुपए की मांग की, जिसमें से पवन ने 2 लाख रुपए नकद दे दिए।ढाई लाख पैसे दिया, नहीं बचा नवजात परिजनों के अनुसार, 22 अप्रैल को जब पिता पवन ढाई लाख में से बचे हुए 50 हजार रुपए लेकर अस्पताल पहुंचा, तब तक बच्चे की मौत हो चुकी थी। जब उन्होंने मौत का कारण जानना चाहा तो डॉक्टरों और स्टाफ ने धमकी दी, जिसके बाद वहां से भागा दिया गया।

5 बच्चों की मां के साथ पकड़ाया, जबरन कराई शादी

बेगूसराय। में पांच बच्चों की मां को एक बच्चे के पिता के साथ आपत्तिजनक हालत में पकड़े जाने का मामला सामने आया है। जिसके बाद लोगों ने पहले प्रेमी की पिटाई की, फिर दोनों की जबरन शादी करा दी। पूरे मामले का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। सामने आए वीडियो में देखा जा सकता है कि लोगों ने पकड़े गए व्यक्ति को लोगों ने पीटकर चोटिल कर दिया है। चोटिल हालत में प्रेमी युवक एक महिला की मांग में लगातार सिंदूर ल थाना के गांधी ग्राम सूजा की है। जानकारी के अनुसार लोगों ने बताया कि महिला का उस व्यक्ति से प्रेम प्रसंग का मामला भी चल रहा था। जिसको लेकर पहले भी पंचायती हुई थी। जिसके बाद युवक ने कुछ दबंगों को साथ लाकर ग्रामीणों को धमकाया भी था। हालांकि उसके बाद दोनों को नहीं मिलने की बात करते हुए मामला को खत्म किया गया था। वहीं, एक बाद फिर से भूसा के ढ़ेर में आपत्तिजनक हालत में पकड़े जाने के बाद ग्रामीणों ने युवक को पीटकर उसका सिर फोड़ दिया है। वहीं, जबरन शादी कराने के बाद व्यक्ति अपने साथ महिला को रखने के लिए तैयार है। जिसको लेकर महिला का कहना है कि वो अपने सभी बच्चों को अपने साथ रखेगी। ग्रामीणों ने बताया कि महिला गांव के ही पप्पू महतो की पत्नी नीलम देवी है, जो पांच बच्चों की मां है। महिला का इसी गांव में घर बनाकर रह रहे डेटा इंट्री ऑपरेटर विकास कुमार के साथ एक साल से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। तीन माह पहले भी लोगों ने दोनों को आपत्तिजनक हालत में पकड़ा था। उस समय पंचायत कर मामले को रफा-दफा कर दिया गया कि अब दोनों नहीं मिलेंगे लेकिन मंगलवार को एक बार फिर गांव के बाहर लोगों ने दोनों को आपत्तिजनक हालत में देख लिया।जिसके बाद लोग आक्रोशित हो गए और दोनों को पकड़ कर पहले पिटाई कर दिया। उसके बाद अपशिष्ट प्रबंधन भवन में बंद कर दिया। बाद में गांव वालों ने दोनों को शादी करा दिया। महिला अब अपने बच्चों के साथ नए पति के साथ ही रहना पसंद करती है।प्रेमिका से पत्नी बनी महिला को साथ रखेगा व्यक्ति
डेटा इंट्री ऑपरेटर विकास ने बताया कि वह साहेबपुर कमाल में डेटा ऑपरेटर है और एक बच्चे का पिता है। गांव वालों ने जबरन शादी कराई है, लेकिन वह प्रेमिका से पत्नी बनी महिला के साथ-साथ पहली पत्नी को भी रखेगा। इस मामले में महिला नीलम देवी का कहना है कि शादी हो गई है लेकिन उसके पांच बच्चे हैं।

ईडी का राजवीर कंस्ट्रक्शन मालिक के यहां छापा

बांका में 13 घंटे चली कार्रवाई, लाखों की नकदी और जेवरात बरामद

बांका। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बिहार के बांका में राजवीर कंस्ट्रक्शन के मालिक विमल अग्रवाल के घर छापेमारी की। मंगलवार सुबह 8 बजे शुरू हुई यह कार्रवाई करीब 13 घंटे तक चली। बौसी थाना क्षेत्र के श्रीराम मेडिकल स्थित विमल अग्रवाल के आवास से दो ब्रीफकेस में लाखों की नकदी और जेवरात बरामद हुए। ईडी ने बरामद सामान को बैंक में जमा करा दिया। टीम ने छापेमारी के बाद कोई जानकारी साझा करने से इनकार कर दिया।सूत्रों के मुताबिक, ईडी ने एक साथ झारखंड और उड़ीसा समेत एक दर्जन से अधिक स्थानों पर छापेमारी की। यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग और बोकारो के वन भूमि घोटाले से जुड़ी बताई जा रही है। 2022 में वन विभाग की जमीन की अवैध खरीद-बिक्री का मामला सामने आया था। इसकी जांच पहले सीआईडी ने की थी। नगदी, जेवरात और दस्तावेजों की जांचछापेमारी में एक महिला अधिकारी सहित छह अफसर और चार सुरक्षा जवान शामिल थे। कार्रवाई से पहले श्रीराम मेडिकल हॉल के सभी कर्मचारियों के मोबाइल जब्त कर लिए गए। टीम ने दूसरी मंजिल पर नगदी, जेवरात और दस्तावेजों की जांच की। कुछ स्थानों की तलाशी के लिए छैनी और हथौड़े का भी इस्तेमाल किया गया।बैंक से नोट गिनने की मशीनों मंगाया करीब 10 घंटे बाद पीएनबी बैंक के तीन कर्मियों को नोट गिनने की मशीनों के साथ बुलाया गया। बरामद नकदी को कैश वैन से बांका भेजा गया। विमल अग्रवाल के घर पर इससे पहले सितंबर 2023 में जीएसटी विभाग ने भी छापा मारा था। राजवीर कंस्ट्रक्शन का कारोबार कई राज्यों में फैला हुआ है।

कार के सीक्रेट चैंबर से 58.5 किलो चांदी बरामद

बांका। में पुलिस ने वाहन जांच अभियान के दौरान एक कार से 58 किलो 480 ग्राम चांदी के जेवरात बरामद किया। मौके से पश्चिम बंगाल के दो तस्कर को भी गिरफ्तार किया गया। बताया जा रहा है गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने बाराहाट पुलिस ने यह कार्रवाई का है।मंगलवार की देर शाम बाराहाट पुलिस ने भागलपुर-हंसडीहा सड़क मार्ग पर यह करवाई किया। इस दौरान पूछताछ और जांच पड़ता चलता रहा।बाराहाट थानाध्यक्ष दीपक पासवान ने बताया कि भागलपुर-दुमका मुख्य मार्ग पर वाहन जांच की जा रही थी। एक संदिग्ध कार की तलाशी में उसके अंदर बने गुप्त तहखाने से भारी मात्रा में चांदी के जेवर मिले। इलेक्ट्रिक तराजू पर मापने पर बरामद चांदी कुल वजन 58 किलो 480 ग्राम निकला। पुलिस ने दो तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। आरोपी पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर निवासी गुरु प्रसाद करमोकार और अमन मलिक हैं। पूछताछ में पता चला कि वे चांदी को पश्चिम बंगाल से दरभंगा ले जा रहे थे।मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीओ अविनाश कुमार और एसडीपीओ अर्चना कुमारी ने मौके का जायजा लिया। एसडीपीओ के निर्देश पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है।

नर्तकी शानू खान की मौत मामले में पिता-पुत्र गिरफ्तार

दरभंगा। के जाले थाना क्षेत्र के जोगियारा गांव में शनिवार रात शादी समारोह में डांस के दौरान हुई हर्ष फायरिंग में नर्तकी शानू खान की मौत के मामले में पुलिस ने दूल्हा और उसके पिता को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों को मुजफ्फरपुर जिले के बेनीबाद थाना क्षेत्र के कोदई गांव से पकड़ा गया। दूल्हा राजन कुमार सिंह और उसके पिता पूर्व सैनिक रामविनय सिंह वहां अपने रिश्तेदार के घर में छिपे हुए थे। पुलिस ने तकनीकी सेल की मदद से दोनों को दबोचा। थानाध्यक्ष संदीप कुमार पाल ने बताया कि दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। अन्य आरोपितों की तलाश में छापेमारी जारी है। फरार आरोपितों में दूल्हे का भाई रंजन कुमार सिंह, मां अनिता देवी, मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थाना क्षेत्र के बाघा खाल निवासी अमित सिंह, प्रभात सिंह और करीब दस अज्ञात लोग शामिल हैं।

आतंकी न हिंदू न मुस्लिम, उनका कोई धर्म नहीं-जमा खान

कश्मीर में हुए हमले पर बोले मंत्री- प्रधानमंत्री ने रद्द की विदेश यात्रा

मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग

कैमूर। प्रदेश के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मोहम्मद जमा खान ने कश्मीर में हुए आतंकी हमले पर प्रतिक्रिया दी है। कैमुर के चैनपुर प्रखंड में उन्होंने कहा कि कश्मीर में आतंकवादियों ने जो हत्याएं की वो बेहद दुखद हैं। मंत्री ने कहा कि आतंकवादियों का न कोई धर्म होता है और न जाति होती है। उन्होंने केंद्र सरकार से इस की है। जमा खान ने बताया कि इस घटना की गंभीरता को देखते हुए प्रधानमंत्री को अपना विदेश दौरा भी रद्द करना पड़ा।
मंत्री ने आगे कहा कि समाज में कुछ लोग भाईचारा बिगाड़ना चाहते हैं। कोई भी धार्मिक ग्रंथ ऐसा करने की इजाजत नहीं देता। एक मुस्लिम होने के नाते वह कह सकते हैं कि जो व्यक्ति किसी की जान लेता है, वह मुसलमान नहीं हो सकता। मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत गंगा-जमुनी तहजीब का देश है। यहां हिंदू-मुस्लिम हमेशा से साथ रहे हैं।
इस हमले में रोहतास के एक व्यक्ति की भी मौत हुई है। उन्होंने कहा कि सरकार पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

पत्नी-बच्चों के सामने बिहार के IB अफसर की हत्या

पहलगाम में आतंकियों ने बरसाई गोलियां, बुलेट्स की आवाज सुनकर परिवार को दूसरी तरफ भेजा था

सासाराम। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले में 27 लोगों की मौत हो गई। हमले में बिहार के रहने वाले मनीष रंजन भी मारे गए। मनीष पिछले 2 सालों से IB के हैदराबाद ऑफिस में सेक्शन ऑफिसर के पद पर पोस्टेड थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, गोलियों की आवाज सुनकर मनीष ने पत्नी और बच्चों को दूसरी दिशा में भागने को कहा। इस दौरान वे परिवार से अलग हो गए। आतंकियों ने उन्हें गोली मार दी। मनीष रोहतास के करगहर थाना क्षेत्र के अरुही गांव के रहने वाले थे। सासाराम शहर के गौरक्षणी मोहल्ले में उनका पुश्तैनी घर है। यहां हमें मनीष के बचपन के दोस्त राजीव उनयन मिले। बोले- 'ये कायराना हरकत है। सरकार को सख्त एक्शन लेते हुए आतंकियों को नेस्तनाबूद कर देना चाहिए।'मनीष के चाचा आलोक कुमार ने बताया- 'मनीष की शादी इलाहाबाद में साल 2010 में हुई थी। उनकी एक बेटी और बेटा है। मुझे मंगलवार रात 9 बजे टीवी से आतंकी हमले की जानकारी मिली। हम न्याय चाहते हैं। सरकार को आतंकियों को खत्म कर देना चाहिए।'औरंगाबाद के वीनगर प्रखंड अंतर्गत बेलाई गांव में उनके पिता का ननिहाल है। परिवार को लोगों ने 30 अप्रैल को परिवार में एक लड़के की शादी है। मनीष ने कहा था कि, जम्मू कश्मीर की यात्रा के बाद 30 अप्रैल औरंगाबाद आएगा और शादी में शामिल होगा।पत्नी की कश्मीर घूमने की ख्वाहिश थीमनीष को पत्नी और 2 बच्चों के सामने गोली मारी गई। रंजन की पत्नी जया और बच्चे सुरक्षित हैं। परिवार ने बताया कि, मनीष की पत्नी कई दिनों से कश्मीर घूमने के लिए कह रही थी।मनीष ने शुरूआती पढ़ाई सासाराम में ही की थी। 2008 में रांची IB में जॉब लगी। 2010 में मनीष की शादी हुई थी। 12 साल का बड़ा बेटा है और 8 साल की लड़की है।मनीष के चाचा आलोक प्रियदर्शी ने बताया- 'मैं भी मनीष के परिवार के साथ कश्मीर जाने वाला था, लेकिन तबीयत खराब होने की वजह से नहीं जा सका।'
औरंगाबाद में रह रहे उनके रिश्तेदार डॉ. सुरेंद्र मिश्र ने बताया- '3 दिन पहले मनीष हैदराबाद से वैष्णो देवी गए थे।'मनीष 3 भाइयों में सबसे बड़े थे। उनका एक भाई विनीत रंजन झारखंड में एक्साइज विभाग में अफसर हैं। दूसरा भाई राहुल रंजन छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर में फूड इंस्पेक्टर है।

संक्षिप्त डायरी

जनस्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन, तीन मई की हड़ताल में होंगे शामिल

पलवल/ भव्य/ खबर। जिले में जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कर्मचारियों ने बुधवार को विभाग की कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने कार्यकारी अभियंता को मांग पत्र सौंपा और लगातार दूसरे दिन भी धरने पर डटे रहे।राज्य मु य संगठन सचिव योगेश शर्मा ने बताया कि कार्यकारी अभियंता मांगों पर चर्चा करने की बजाय पुलिस में शिकायत की धमकी दे रहे हैं। इसी के विरोध में 11 अप्रैल को एक दिवसीय सांकेतिक धरना दिया गया था। उस दिन अधीक्षक अभियंता और कार्यकारी अभियंता कार्यालय से गायब रहे। कर्मचारियों की प्रमुख मांगों में एलटीसी बजट जारी करने का मुद्दा शामिल है। साथ ही कौशल रोजगार निगम के पोर्टल पर पुराने कर्मचारियों के बजाय रिश्तेदारों को जगह दिए जाने का विरोध है। यह मुद्दा होडल के विधायक हरिंद्र रामरतन ने भी ग्रीवांस कमेटी में उठाया था। कर्मचारी नेताओं ने चेतावनी दी है कि अगर मांगें नहीं मानी गई, तो 3 मई 2025 को राष्ट्रव्यापी हड़ताल की जाएगी। इस दौरान सभी जिला मु यालयों पर प्रदर्शन होगा और डीसी के माध्यम से ज्ञापन सौंपा जाएगा। धरने की अध्यक्षता पलिक हेल्थ ब्रांच पलवल के प्रधान रामजीत राणा ने की, जबकि कार्यक्रम का संचालन दीपक ने किया। सर्व कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष राजेश शर्मा, सीटू की जिला उर्मिला रावत, रिटायर्ड कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष बलजीत शास्त्री, बिजली बोर्ड यूनियन राज्य उपप्रधान जितेन्द्र सिंह तेवतिया, पलवल लॉक प्रधान राज कुमार डागर, सचिव हरकेश सौरोत, होडल के प्रधान देवेंद्र नंबरदार, हथीन खंड प्रधान प्रेम चन्द सहरावत, सिंचाई विभाग के प्रधान सतपाल करहाना, बी एंड आर विभाग ब्रांच प्रधान सुभाष चंद्र राणा, होडल ब्रांच प्रधान अरूण कुमार, बिजेंद्र चौहान, रणवीर वर्मा व पलिक हेल्थ ब्रांच सचिव मजलिस आदि ने संबोधित किया।

सोहना चौक से कबीर भवन चौक तक सड़क 15 दिनों के लिए बंद

गुरुग्राम / भव्य/ खबर। यहां ओल्ड रेलवे रोड पर सोहना चौक से लेकर कबीर भवन चौक तक की सड़क 15 दिन तक वाहनों की आवाजाही के लिए बंद रहेगी। इस क्षेत्र में चैंबर व सीवरेज लाइन की मुर मत का काम होगा। क्षेत्र के पार्षद दलीप साहनी के मुताबिक ओल्ड रेलवे रोड कबीर भवन चौक से पहले दो चेंबर और सीवर लाइन के टूटने से नई बस्ती क्षेत्र में सीवर का पानी भर गया है। लोगो को परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा कि यह कार्य पहले ही शुरू हो जाता, लेकिन पुलिस द्वारा रोड बंद करने की अनुमति नहीं मिली। अब अनुमति मिली है। अब चेंबर और सीवर लाइन की मर मत का कार्य शुरू किया जाएगा। पुलिस द्वारा 30 दिन के लिए रोड बंद की अनुमति दी गई है, पर कोशिश है कि 15 दिन में यह कार्य पूरा हो जाए। उन्होंने लोगो से अनुरोध किया है कि इस कार्य के पूरे होने तक सहयोग करें और वैकल्पिक मार्ग का उपयोग करें।

पलवल में मुख्यमंत्री के आगमन से पहले डीसी ने अस्पताल व अनाज मंडी का किया निरीक्षण

पलवल / भव्य/ खबर। जिले के होडल कस्बे में आगामी 30 अप्रैल को होने वाले हरियाणा के मु यमंत्री नायब सिंह सैनी के दौरे को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। इसी क्रम में जिला उपायु त ने बुधवार को प्रशासनिक अधिकारियों के साथ गौ सेवा धाम अस्पताल और होडल अनाज मंडी का निरीक्षण किया। मु यमंत्री अक्षय तृतीया के अवसर पर होडल में कई कार्यक्रमों में शामिल होंगे। सीएम सैनी के दौरे के दौरान क्षेत्र में चल रही विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास होगे। इसके उपरांत वे अनाज मंडी में आयोजित जनसभा को संबोधित करेंगे, जहां बड़ी सं या में लोगों के पहुंचने की संभावना है। डीसी ने कार्यक्रम स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था, हेलीपैड की स्थिति, पार्किंग क्षेत्र और यातायात प्रबंधन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि हेलीपैड से लेकर जनसभा स्थल तक कड़ी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और मजबूत बैरिकेडिंग लगाई जाए, ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो। निरीक्षण के दौरान संबंधित विभागों के अधिकारियों को समयबद्ध ढंग से सभी व्यवस्थाएं पूरी करने के निर्देश भी दिए गए। डीसी ने कहा कि मु यमंत्री के दौरे को सफल और सुरक्षित बनाने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां युद्धस्तर पर की जा रही हैं इस मौके पर जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। प्रशासन की ओर से यह भी आश्वासन दिया गया कि कार्यक्रम में शामिल होने वाले नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए विशेष प्रबंध किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि यह कार्यक्रम देवी चित्रलेखा जी द्वारा संचालित गौ सेवा धाम में आयोजित किया जा रहा है।

खेल मंत्री ने पहलगाम आतंकी हमले में मृतकों को दी श्रद्धांजलि

पलवल / भव्य/ खबर। हरियाणा के खेल मंत्री गौरव गौतम ने जमू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हुए इसे मानवता पर सीधा हमला बताया है। उन्होंने कहा कि इस कायराना हमले ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है और इसमें मारे गए निर्दोष नागरिकों व सुरक्षाबलों की शहादत को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।मंत्री गौतम ने बुधवार को इस आतंकी हमले में शहीद हुए हरियाणा के करनाल जिले के लेि टनेंट विनय नरवाल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका बलिदान देश हमेशा स्मरण रखेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार शहीद के परिजनों के साथ इस कठिन समय में पूरी मजबूती से खड़ी है और उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी।उन्होंने कहा, हमले में अपनों को खोने का दर्द हर भारतीय महसूस कर रहा है। देश की हर आंख नम है और यह दुःख शदों में व्यत नहीं किया जा सकता। जो निदोर्षों की जान लेते हैं, वे किसी भी सूरत में ब शे नहीं जाएंगे। मंत्री ने कहा कि देश आज आतंकवाद के खिलाफ एकजुट है और यह हमला भारत की एकता और संकल्प को डिगा नहीं सकता। "भारत आतंक से डरने या झुकने वाला देश नहीं है। हम अपने हर नागरिक की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने आतंकी हमले में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हुए कहा कि आतंकियों को उनके इस कुकृत्य की सजा जरूर मिलेगी।

अधिकारी समस्याओं का खुद ही संज्ञान लेकर करें समाधानः नायब सिंह सैनी

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति की बैठक

गुरुग्राम, (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हम सबकी जनता के प्रति जवाबदेही है। उनकी बात सुनना और काम करना हमारी जिम्मेवारी है। जनमानस की समस्याओं पर अधिकारी अपने आप ही संज्ञान लेकर समाधान करें। उन्होंने बुधवार को गुरुग्राम के स्वतंत्रता सेनानी जिला परिषद हॉल में जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने मुख्यमंत्री का गुरुग्राम आगमन पर स्वागत किया। बैठक में पटौदी की विधायक बिमला चौधरी, सोहना के विधायक तेजपाल तंवर और गुरुग्राम के विधायक मुकेश शर्मा भी मौजूद रहे।

सीएमन नायब सिंह सैनी ने बैठक से पहले दो मिनट का मौन धारण कर जम्मू कश्मीर में एक दिन पहले हुई आतंकी घटना के मृतकों को श्रद्धांजलि दी। जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति की बैठक में 19 परिवाद रखे गए, मुख्यमंत्री ने 18 परिवादों का निपटारा करते हुए एक मामले को आगामी बैठक तक लंबित रखने के

निर्देश दिए और संबंधित अधिकारियों से आगामी बैठक में स्टेट्स रिपोर्ट लेकर आने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता को किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। शहर में स्वच्छता की तरफ़ विशेष ध्यान दिया जाए, ताकि गुरुग्राम को स्वच्छ और सुंदर बनाया जा सके।

शहर की विकास में नही रहनी चाहिए संसाधनों की कमी

मुख्यमंत्री ने बैठक में सेक्टर 29 स्थित लेजर वैली ग्राउंड में सी एंड वेस्ट के उठान से संबंधित व डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन के संदर्भ में निगमायुक्त को एचकेआरएनएल से अतिरिक मैनपॉवर भर्ती करने के निर्देश देते हुए कहा कि गुरुग्राम को एक सुंदर व स्वच्छ तथा सुव्यवस्थित शहर बनाना सरकार की प्राथमिकता है। ऐसे में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में संसाधनों की कमी नही रहनी चाहिए।

कार्यकारी अभियंता पर कार्रवाई के निर्देश

मुख्यमंत्री ने बैठक में गांव बेगमपुर खटोला से संबंधित सीवर ओवरफ्लो की शिकायत पर शिकायत के निवारण तथा सीवर ओवरफ्लो के लिए दोषी औधोगिक इकाइयों पर कार्रवाई ना करने पर नगर निगम के कार्यकारी अभियंता पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने गांव कादरपुर के बुजुर्ग की शिकायत पर संज्ञान लेते हुए पुलिस अधिकारियों को खरीदार तथा जमीन बेचने वाले दोनों व्यक्तियों पर एफआईआर दर्ज करने तथा संबंधित तहसीलदार को रेवेन्यू से सम्बंधित कार्रवाई में तीव्र गति से प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सोहना क्षेत्र से संबंधित एक किसान के खेत मे बने कमरे को तोड़कर अवैध कब्जे की शिकायत पर एसडीएम को 10 दिनों के भीतर कब्जा दिलवाने व जांच में लापरवाही बरतने वालों पर कारवाई करने के निर्देश दिए।

सभी 404 रेन वाटर हार्वेस्टिंग की सफाई करने के निर्देश

मुख्यमंत्री ने गुरुग्राम में जलभराव तथा रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की सफाई ना होने की शिकायत पर अधिकारियों को निर्देश दिए कि संबंधित विभाग जिला के सभी 404 रेन वाटर हार्वेस्टिंग की सफाई बरसात से पहले करवाना सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने इस दौरान सेक्टर 4 से संबंधित विकास कार्यो को लेकर अगली बैठक तक की समय सीमा निर्धारित की। गांव मुबारकपुर के सरपंच की शिकायत-जलघर को एक साल से बिजली का कनेक्शन नहीं मिलने की शिकायत पर डीसी अजय कुमार को निर्देश दिए कि वे स्वयं इस मामले की जांच कर लापरवाही करने वाले अधिकारियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करें।

सीएम नायब सिंह सैनी ने पहलगाम आतंकी हमले को बताया निंदनीय

हमले में मारे गए आम नागरिकों को मुख्यमंत्री ने दी श्रद्धांजलि

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की बुधवार को कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि देश ऐसे कठिन समय में एकजुट है और आतंकवाद से डरने या झुकने वाला नहीं है। मुख्यमंत्री ने हमले में मारे गए आम नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा की यह कायराना हरकत है, जिसने निर्दोष लोगों की जान ली। नागरिकों का बलिदान सदैव स्मरण रहेगा और हम उनके परिवारों के साथ खड़े रहेंगे। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने पहलगाम आतंकी हमले में जान गंवाने वाले विनय नरवाल के परिजनों से भी बात की। मुख्यमंत्री ने परिवार के साथ दुख साझा किया और कहा कि हरियाणा सरकार दुख की घड़ी में परिवार के साथ खड़ी है।

संविधान का सम्मान और रक्षा करना हर नागरिक का दायित्व - सांसद राजकुमार चाहर

भारत देश के संविधान अपनाने के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार की ओर से मनाए जा रहे 'हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान' अभियान के तहत बुधवार को जिला के गांव कुश्क के अंबेडकर पार्क में 'संविधान सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

पलवल। भारत देश के संविधान अपनाने के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार की ओर से मनाए जा रहे 'हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान' अभियान के तहत बुधवार को जिला के गांव कुश्क के अंबेडकर पार्क में 'संविधान सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता बीजेपी जिलाध्यक्ष विपिन बैंसला ने की। इस अवसर पर सभी ने मिलकर संविधान का सम्मान और रक्षा करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ डा. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया।फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर ने कहा कि वर्तमान सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चहुंमुखी विकास करने के साथ-साथ देश के महापुरुषों को पूरा-मान सम्मान दे रही है। यही कारण है कि सरकार ने बाबा साहेब डा. भीमराव अंबेडकर के जन्म स्थान से लेकर उनके शिक्षा ग्रहण स्थल, देहांत स्थल और उनके अंतिम संस्कार स्थल सहित अन्य सभी जगह उनके स्मारण बनाकर पंचतीर्थ बनाने का कार्य किया है। सांसद चाहर ने कहा कि हमारा संविधान हमारे अधिकारों की रक्षा करता है।

देश के प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार देता है। संविधान से ही सभी नागरिकों के अधिकार संरक्षित है। यह अधिकार हमें कर्तव्यबोध भी करवाते हैं। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को अपने संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा और श्रद्धा रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान एक लिखित दस्तावेज है, जो सरकार और उसके संगठनों के मौलिक बुनियादी संहिता, संरचना, प्रक्रियाओं, शक्तियों और कर्तव्यों और नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों का निर्धारण करने वाले ढांचे को निर्धारित करता है। इसे 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया था और यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से भारत देश के संविधान अपनाने के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान' अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में आज 'संविधान सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भारत को विश्व गुरु बनाने के स्वप्न को युवा साकार करेंगे। सांसद फतेहपुर सीकरी राजकुमार चाहर ने कहा कि विश्व के अन्य लोग भी हमारे यहां अध्ययन करने आते हैं कि संविधान के रास्ते पर इतना बड़ा लोकतांत्रिक देश किस तरह चल रहा है।वरिष्ठ भाजपा नेता सतबीर सिंह पटेल ने कहा कि संविधान लोकतंत्र का रक्षक है जो कि देश और समाज का मूलाधार है। सरकार की ओर से देश के कोने-कोने में संविधान को युवाओं तक पहुंचाने के लिए यह कार्यक्रम आयोजित करवाए हैं, ताकि युवाओं को संविधान की जानकारी मिल सके। आने वाली पीढ़ी को संविधान की जानकारी देने के लिए यह अच्छा प्रयास है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे संविधान को अपनाते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान प्रदान करें।इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष विपिन बैंसला, वरिष्ठ नेता हरेंद्रपाल राणा, जिला महामंत्री वीरपाल दीक्षित, सतवीर पटेल, जिला उपाध्यक्ष अजय डागर, ग्राम सरपंच प्रियंका, एस.सी. मोर्चा के जिला अध्यक्ष सत्य प्रकाश जाटव, ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष दिनेश पांचाल, युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष प्रदीप चंदीला, नवीन, सुशील, सुनील, सतबीर बैंसला सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

अमेजन कंपनी में नौकरी दिलाने के नाम पर युवती से चार लाख ठगे

गुरुग्राम। शहर में एक लड़की से अमेजन कंपनी में ऑनलाइन नौकरी दिलाने के नाम पर चार लाख रुपये ठगने का मामला सामने आया है। ठगों ने युवती से 6 अलग-अलग लोगों के बैंक अकाउंट में चार लाख रुपये ट्रांसफर कराए। अब युवती ने पुलिस में शिकायत देकर रुपये वापस दिलाने की गुहार लगाई है। बुधवार को मानेसर साइबर पुलिस थाना प्रभारी ने बताया कि इस मामले की जांच की जा रही है। हालांकि उन्होंने लोगों से साइबर ठगों से सतर्क रहने की अपील भी की है।सेक्टर-81 की डीएलएफ अल्टिमा सोसायटी की रहने वाली मुनमुन ने मानेसर साइबर थाना में शिकायत दी। शिकायत में मुनमुन ने बताया कि वह बेरोजगार है। कुछ दिन पहले उसके पास नोकरी का मैसेज आया था। मैसेज आने के बाद एक कॉल आई और उसे टेलीग्राम पर बने एक ग्रुप से जोड़ दिया। मुनमुन ने बताया कि उसे अमेजन में नौकरी देने का झांसा दिया गया। मुनमुन ने बताया कि विश्वास जताने के लिए शुरू में काम के बदले कुछ भुगतान हुआ। युवती के अनुसार आरोपियों ने रुपये इंवेस्टमेंट के लिए उससे रुपये मांगने शुरू कर दिए। युवती का आरोप है कि ठगों ने 16 अप्रैल को मुफीद, रफीक, शेख, गौतम चांगल, दुरूक्षा शेख, उमेश राजू, गुरखुड़े और गजेंद्र बंटा के खातों में 4 लाख रुपये ट्रांसफर करवा लिए।

सुल्तानपुर महाविद्यालय में हुआ प्रथम दीक्षांत समारोह

गुरुग्राम। फर्रूखनगर तहसील क्षेत्र में स्थित राजकीय महाविद्यालय सुल्तानपुर का प्रथम दीक्षांत समारोह बुधवार को संपन्न हुआ। महाविद्यालय प्रांगण में इस कार्यक्रम में स्नातक की पढ़ाई पूरी कर चुके अपने पूर्व छात्र छात्राओं के आगमन से समूचा महाविद्यालय परिसर खिल उठा। श्वेत वस्त्रों और नीले पट्टों में सजे विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। स्टारेक्स यूनिवर्सिटी के पूर्व उपकुलपति डॉ अशोक दिवाकर बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ मुख्य अतिथि और प्राचार्य द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। इसके पश्चात् प्राचार्या कुसुमलता द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय तथा वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डॉ अशोक दिवाकर ने विद्यार्थियों को इतिहास का सिंहावलोकन कर अपने भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर चलने का आह्वान किया। व्यक्तिगत आचरण के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने से नहीं, बल्कि अच्छे आचरण से ही समाज हमें शिक्षित कह पाएगा। स्वरोजगार पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि भारत का युवा नए उद्यमों के माध्यम से रोजगार सृजन में अपनी भूमिका अदा करे। कार्यक्रम में कला और वाणिज्य के 67 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई।इस अवसर पर महाविद्यालय की पहली पत्रिका सृजन का भी विमोचन किया गया। विमोचन के अवसर पर प्राचार्या कुसुमलता ने मुख्य संपादिका और वाणिज्य विभाग की प्राध्यापिका पूजा कुमारी की मेहनत की प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन रोहित शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित कर किया। इस अवसर पर डॉ मुकेश, डॉ प्रियंका, डॉ कविता, डॉ देविका, डॉ स्वाति, डॉ हेमलता, दिनेश बेड़ा और अनुपमा उपस्थित रहे।

प्रेमी ने दो बच्चों की मां की पत्थर मारकर की हत्या

गुरुग्राम। शहर में दो बच्चों की मां के प्रेमी ने महिला की पत्थर से कुचलकर हत्या कर दी और फरार हो गया। पुलिस ने चार दिन में महिला के मर्डर की गुत्थी को सुलझा लिया है। बुधवार को मर्डर का खुलासा करते हुए पुलिस प्रवक्ता संदीप कुमार ने बताया कि पुलिस ने महिला की हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान अभिषेक मिश्रा के रूप में हुई है। 20 अप्रैल को सेक्टर-83 स्थित एसएस ग्रुप के खाली प्लॉट में झाड़ियों के बीच महिला का शव खेड़की दौला पुलिस ने बरामद किया था। महिला का शव मिलने से आस-पास के क्षेत्र में सनसनी फैल गई थी। महिला के शव की पहचान नहीं हो पाई थी। 22 अप्रैल को एक व्यक्ति ने सेक्टर-29 थाना में अपनी बहन रूपाली के लापता होने की शिकायत दी।

सीएम ने किया हरियाणा की पहली 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' का उद्घाटन

गुरुग्राम, (एजेंसी)। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को गुरुग्राम के उद्योग विहार सेक्टर-18 में हरियाणा की पहली 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' का शुभारंभ किया। उन्होंने पैदल चलकर इसका निरीक्षण भी किया। उन्होंने कहा कि 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' राज्य सरकार की उस प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसमें हर वर्ग, बच्चा, बुजुर्ग, महिला या दिव्यांग, को शहर में सम्मानपूर्वक और सुरक्षित रूप से चलने का अधिकार मिलना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार की प्राथमिकता केवल बुनियादी ढाँचे का निर्माण नहीं, बल्कि मानवीय विकास है। गुरुग्राम की इन सड़कों पर पैदल चलना, साइकिल चलाना, या बस पकड़ना अब केवल एक ज़रूरत नहीं, बल्कि एक सुखद अनुभव होगा। यह परियोजना दिखाती है कि जब सरकार, निजी क्षेत्र और सामाजिक संस्थाएं एक साथ आते हैं, तो हम कितने अद्भुत और स्थायी बदलाव ला सकते हैं। यह 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' मॉडल केवल हरियाणा नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए एक उदाहरण बनेगा।

यह 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' परियोजना

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार की प्राथमिकता केवल बुनियादी ढाँचे का निर्माण नहीं, बल्कि मानवीय विकास है। गुरुग्राम की इन सड़कों पर पैदल चलना, साइकिल चलाना, या बस पकड़ना अब केवल एक ज़रूरत नहीं, बल्कि एक सुखद अनुभव होगा। यह परियोजना दिखाती है कि जब सरकार, निजी क्षेत्र और सामाजिक संस्थाएं एक साथ आते हैं, तो हम कितने अद्भुत और स्थायी बदलाव ला सकते हैं। यह 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' मॉडल केवल हरियाणा नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए एक उदाहरण बनेगा।यह 'कम्प्लीट स्ट्रीट्स' परियोजना उद्योग विहार की सनथ रोड और गली नंबर-7 पर लागू की गई है, जो कुल 2.4 किलोमीटर लंबी और 30 मीटर चौड़ी है।

उद्योग विहार की सनथ रोड और गली नंबर-7 पर लागू की गई है, जो कुल 2.4 किलोमीटर लंबी और 30 मीटर चौड़ी है। यह सड़क पुरानी दिल्ली रोड को एयरटेल कार्यालय (एनएच 48) से जोड़ती है। परियोजना की कुल लागत लगभग 23 करोड़ रुपये रही, जिसमें जीएमडीए, एमसीजी, डीएचबीवीएन और राहगीरी फाउंडेशन ने मिलकर योगदान दिया। इस परियोजना में राहगीरी फाउंडेशन के साथ-साथ नगरो, मारुति सुजुकी और सेफएक्सप्रेस जैसी कंपनियों ने भी भागीदारी की, जिससे सरकारी और निजी क्षेत्रों के सहयोग की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की गई।

पैदल यात्रियों के लिए चौड़े और छायादार फुटपाथ, साइकिल चालकों के लिए सुरक्षित ट्रैक, वर्षा जल संरक्षण के लिए बायोसवेल्स, और 700 पुराने पेड़ों का संरक्षण किया गया है। साथ ही 20,000 से अधिक फूलों के पौधे लगाए गए हैं। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चार प्रशिक्षित स्ट्रीट मार्शल भी 24 घंटे तैनात हैं। यह मॉडल आने वाले समय में पूरे हरियाणा और देश के अन्य शहरों के लिए एक प्रेरणा बनेगा।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि हमें पॉलीथिन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए और जब भी बाजार जाएँ, अपना रीयूजेबल बैग साथ रखें। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण ऐसा सकारात्मक कार्य है जो न केवल वातावरण को शुद्ध करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ जीवन की नींव रखता है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति द्वारा अपने जन्मदिन, शादी की सालगिरह या किसी विशेष दिन पर उपहारों की जगह एक पेड़ लगाना और दूसरों को इसके लिए प्रेरित करना एक अनोखी और प्रभावशाली पहल हो सकती है।

संक्षिप्त डायरी

नजूल भूमि पर गरीबों के लिए लैट बनाएगी योगी सरकार

लखनऊ / भव्य/ खबर। उारप्रदेश की राजधानी लखनऊ के ऐशबाग इलाके में अब नजूल भूमि पर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लैट बनाए जाएंगे। लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार ने मौके पर पहुंचकर योजना का जायजा लेकर जरूरी कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने जमीन का सर्वे करने और नियोजन के लिए पांच सदस्यीय समिति बनाई है, जो एक ह ते में रिपोर्ट सौंप देगी। निर-ीक्षण के दौरान सामने आया कि वहां कुछ परिवार झोपडिड़ां और टिनशेड में रह रहे हैं और कई जगहों पर अवैध दुकानें भी चल रही हैं। उपाध्यक्ष ने अधिकारियों को अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जल्द शुरू करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने चारबाग स्टेशन के पास बने फुटओवर ब्रिज का भी निरीक्षण कर यात्रियों की सुविधा के लिए एस्केलेटर सीढिड़ां बनाने का प्रस्ताव दिया। इसके लिए स्ट्रक्चर डिजाइन और लोड टेस्टिंग जल्दी पूरी करने का आदेश दिया। इस दौरान कुमार ने सुदर्शनपुरी में बन रहे कयुनिटी सेंटर का भी निरीक्षण हुआ, जहां काम की गति संतोषजनक मिली। उपाध्यक्ष ने कहा कि इसके संचालन और रखरखाव के लिए जल्दी ही टेंडर निकाला जाए। इसके अलावा, नंदाखेड़ा के तुलसी कॉ प्ले स का भी निरीक्षण किया गया, जहां अब पुराने आवंटियों को प्रधानमंत्री आवास में शि ट कर पूरी कॉलोनी का रीडेवलपमेंट किया जाएगा। अतिक्रमण हटाकर इस प्रक्रिया को इसी सप्ताह शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। उपाध्यक्ष ने ऐशबाग में जमुना झील के पास बने अटल पार्क का भी निरीक्षण किया और वहां सुरक्षाकर्मियों की तैनाती, टिकट व्यवस्था शुरू करने और पार्क को जनता के लिए खोलने के निर्देश दिए।

बोकारो में मारे गए आठ न सलियों के शव लेने नहीं पहुंचे उनके परिजन

बोकारो / भव्य/ खबर। झारखंड के बोकारो के लुगु पहाड़ में पुलिस मुठभेड़ के दौरान मारे गए आठ न सलियों का पोस्टमार्टम हुआ। लेकिन, मारे गए न सलियों के परिजन या उनके समर्थक अबतक सामने नहीं आए हैं। आठ में से मारे गए एरिया कमांडर अरविंद यादव के शव को लेने भाई अजज बोकारो पहुंचे, जिन्हें पुलिस ने शव जमुई ले जाने के लिए सौंप दिया गया है। इन सात न सलियों में विवेक एक करोड़ का इनामी माओवादी है और सेंट्रल कमेटी सदस्य है। लेकिन मुठभेड़ में मौत के बाद उसके शव पर दावा करने वाला अबतक सामने नहीं आया। बोकारो पुलिस की टीम मानवता का परिचय देकर गिरिडीह रवाना हुई। योंकि मारे गए आठ में से छह न सली गिरिडीह के मूल निवासी हैं। फोटो दिखाकर पहचान के बाद परिजनों को शव का अंतिम संस्कार के लिए प्रोत्साहित करने में जुटे हैं। शवों के पोस्टमार्टम के बाद सभी मृत आठ न सलियों का बेसरा जांच के लिए सुरक्षित रखा गया है। वहीं, डीएनए जांच के लिए मृत शरीर से सैंपल संग्रहित कर सुरक्षित रखे गए हैं। इसके अलावा उनके शरीर से निकले दो बुलेट भी सुरक्षित रखे गए हैं। पोस्टमार्टम होने तक किसी भी मृत न सली के शव को हासिल करने के लिए कोई दावा पेश नहीं किया। उनके कोई भी संबंधी शव लेने के लिए पोस्टमार्टम हाउस नहीं पहुंचे।

दिल्ली दंगे को लेकर कोर्ट ने 57 आरोपियों पर किए गंभीर

आरोप तय-कोर्ट ने कहा-आरोपियों की हरकतें हिंसा फैलाने और कानून को ठेंगा दिखाने की थीं

नई दिल्ली / भव्य/ खबर। उार-पूर्वी दिल्ली में साल 2020 में हुए दंगे को लेकर कड़कडडूमा कोर्ट ने फैसला सुनाया है। कोर्ट ने चांद बाग और मु य वजीराबाद रोड इलाके में हुई हिंसा से जुड़े मामले में 57 आरोपियों के खिलाफ दंगा, आगजनी, तोडफोड़ और हमला करने जैसे गंभीर आरोप तय किए हैं। कोर्ट ने साफ कहा कि यह कोई आकस्मिक भीड़ नहीं थी, बल्कि एक उद्देश्य के साथ एकत्र हुई हिंसक थी, जो तबाही मचाने निकली थी। जज पुलस्त्य प्रमाचला ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। कोर्ट के मुताबिक दर्जनों गवाहों ने यह पुष्टि की है कि आरोपी घटनास्थल पर मौजूद थे। गवाहों ने कोर्ट को बताया कि दंगाई भीड़ ने एक ट्रक, टू-व्हीलर और गोदाम को आग के हवाले कर दिया था। साथ ही आम नागरिक को रोककर उसके साथ मारपीट की। कोर्ट का कहना है कि आरोपियों की हरकतें हिंसा फैलाने और कानून व्यवस्था को ठेंगा दिखाने की थीं। कोर्ट ने आरोपियों पर से आपराधिक साजिश की धारा के आरोप से राहत दी, लेकिन यह जरूर माना कि भीड़ की नीयत साफ तौर पर हिंसा फैलाने की थी।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में लगे भूकंप के हल्के झटके, कोई नुकसान नहीं

जम्मू/ भव्य/ खबर। जमू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में बुधवार दोपहर भूकंप के हल्के झटके लगे। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक यह झटका दोपहर 2 बजकर 10 मिनट और 44 सेकंड पर दर्ज किया गया। रि टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 3.6 मापी गई, जबकि इसकी गहराई 10 किलोमीटर थी। भूकंप की तीव्रता कम होने के कारण जान-माल के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। लोग घबराकर अपने घरों और कार्यालयों से बाहर आ गए थे, लेकिन स्थिति जल्द ही सामान्य हो गई। प्रशासन ने बताया कि एहतियात के तौर पर निगरानी की जा रही है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह झटका भूगर्भीय हलचल का सामान्य परिणाम हो सकता है।

ठाणे में 12 वर्षीय बच्चे की हत्या का मामला, 2 आरोपियों को हाईकोर्ट ने दी जमानत

मुंबई / भव्य/ खबर। बम्बई हाई कोर्ट ने ठाणे के दो लोगों को जमानत दे दी है, जिन पर अपने दोस्त की मदद करके 12 साल के एक लड़के का अपहरण करने और उसकी हत्या करने का आरोप था, जो उसे 'नपुंसक कहता था। हाल ही में हुई सुनवाई के दौरान, अदालत ने फैसला सुनाया कि अभियोजन पक्ष अपराध में दो आरोपियों की प्रत्यक्ष संलिप्तता को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत पेश करने में विफल रहा है।

कहां हुई चूक: हमले के इनपुट होने के बाद भी हो गया नरसंहार?

जम्मू (एजेंसी)। पहलगाम हमले को लेकर सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि खुफिया एजेंसियों को इस तरह के हमले की संभावना के बारे में पहले से इनपुट मिले थे। अप्रैल 2025 की शुरुआत में ही खुफिया सूत्रों ने चेतावनी दी थी कि आतंकी संगठन पहलगाम जैसे पर्यटक स्थलों को निशाना बनाने की योजना बना रहे हैं। इनपुट्स में यह भी कहा गया था कि आतंकियों ने रेकी कर ली है और वे किसी बड़े हमले की फिराक में हैं। खुफिया जानकारी के अनुसार, हमास, जैश और लश्कर के बीच तालमेल बढ़ रहा था, और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आईएसआई की देखरेख में आतंकियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

10 मार्च को केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने जम्मू में एक उच्च स्तरीय सुरक्षा समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। एक महीने से भी कम समय बाद, 6 अप्रैल को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर में इंटीग्रेटेड कमान की बैठक की अध्यक्षता की। जम्मू-कश्मीर के दो क्षेत्रों में लगातार बैठकें खुफिया एजेंसियों की चेतावनी के बीच हुईं कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में भीषण गर्मी की तैयारी कर रहा है। मंगलवार को, जब पहलगाम में पर्यटकों की चीखें गूंजने लगीं, तो एजेंसियों की सबसे बड़ी आशंका सच साबित हुई।

रिपोर्ट के मुताबिक, लगभग छह आतंकवादियों ने, कुछ स्थानीय सहायकों की मदद से, इस हमले को अंजाम दिया। सूत्रों ने बताया कि ये आतंकी हमले से कुछ दिन पहले इलाके में आ चुके थे, रेकी की थी, और मौके की तलाश में थे। अप्रैल की शुरुआत (1-7 तारीख के बीच) में कुछ होटलों की रेकी किए जाने की खुफिया सूचना पहले से ही मौजूद थी। हालांकि एक वरिष्ठ सूत्र ने कहा, यह कहना गलत होगा कि खुफिया एजेंसियों से चूक हुई। इनपुट्स थे, लेकिन हमलावर मौके की तलाश में थे और उन्होंने सही समय देखकर वार किया। इस हमले में कुछ विदेशी, खासतौर पर पाकिस्तानी आतंकवादी भी शामिल बताए जा रहे हैं। माना जा रहा है कि इन आतंकियों ने कुछ दिन पहले ही घाटी में घुसपैठ की थी और हमले से पहले इलाके की रेकी की थी। केंद्रीय बलों द्वारा रखे गए आंकड़ों के अनुसार, जम्मू-कश्मीर में 70 विदेशी आतंकवादी सक्रिय हैं। डीजीपी नलिन प्रभात द्वारा मार्च में हीरानगर में एक ऑपरेशन का नेतृत्व करने के बाद अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हाल ही में घुसपैठ की कोशिशों को विफल कर दिया गया था।

लेकिन एजेंसियों को संदेह है कि कई विदेशी आतंकवादी अपने आकाओं से सही आदेश पाने के लिए घुसपैठ के बाद छिपे हुए हो सकते हैं। बर्फ पिघलने के साथ, पहाड़ी रास्ते खुल गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पहलगाम में आतंकवादी पर्यटकों पर हमला करने के लिए बैसारन के मैदानों तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों से नीचे उतरे। आतंकवादियों को भागने से रोकने

के लिए घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया है। एनआईए की टीम मौके पर जाने के लिए तैयार है। एनआईए उन ओवरग्राउंड वर्करों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर सकती है, जिन्होंने संभवतः विदेशी आतंकवादियों की मदद की थी।

माता के श्रद्धालुओं में आई कमी, घोड़े-पिट्ठू, पालकी वालों और कारोबारियों में निराशा

कटड़ा । जम्मू-कश्मीर में पल-पल मौसम बदल रहा है। कटड़ा में एकाएक तेज हवा के साथ वर्षा और ओलावृष्टि शुरू हो गई। मां वैष्णो देवी मार्ग पर ओले गिरने से हल्की सफेद चादर बिछ गई। करीब एक घंटा तक ओले गिरते रहे, जिससे मां वैष्णो देवी के मार्ग, भवन परिसर और कटड़ा में जैसे हल्की सफेद चादर बिछ गई हो। इससे ठंड का अहसास भी होने लगा। मौसम के इस मिजाज के कारण दर्शन को जाने वाले श्रद्धालुओं को दिक्कत हुई। मौसम के तेवर को देखकर भवन मार्गों पर आपदा प्रबंधन दल के साथ श्राइन बोर्ड प्रशासन, पुलिस विभाग, सीआरपीएफ के अधिकारी व जवान जगह-जगह तैनात हैं। फिलहाल मां वैष्णो देवी के सभी मार्ग पूरी तरह से सुचारु है, लेकिन कटड़ा-सांछीछत के बीच चलने वाली हेलीकाप्टर सेवा दिन में अधिकांश समय बाधित ही रही। बैटरी कार और केबल कार सेवा बहाल रही। करीब 20,800 श्रद्धालु भवन की ओर रवाना हो चुके थे। श्रद्धालुओं का आना जारी था। इससे पूर्व रविवार को 30,072 श्रद्धालुओं ने माता दरबार में हाजिरी लगाई थी।

व्यापारी वर्ग में निराशा- हालांकि, छुट्टियों के खत्म होने के बाद से और मौसम में आए बदलाव की वजह से माता के दरबार में श्रद्धालुओं की कमी देखने को मिल रही है। श्रद्धालुओं में आई कमी की वजह से घोड़े-पिट्ठू, पालकी वालों के साथ-साथ व्यापारी वर्ग में निराशा देखने को मिल रही है।

महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम शिंदे श्रीनगर रवाना, जम्मू-कश्मीर में फंसे पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए उठाया कदम

जम्मू (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे आज शाम श्रीनगर पहुंचेंगे। इस हमले में 26 नागरिक मारे गए थे और कई घायल हुए थे। एकनाथ शिंदे शाम 7-30 बजे मुंबई से श्रीनगर के लिए रवाना होंगे। प्रवक्ता ने कहा कि उनकी यात्रा जम्मू-कश्मीर में सभी पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए महाराष्ट्र सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। मंगलवार दोपहर पहलगाम के बैसरन इलाके में आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों के एक समूह पर हमला किए जाने के बाद महाराष्ट्र के छह लोगों सहित 26 नागरिक मारे गए। माना जा रहा है कि आतंकवादियों की संख्या चार थी। महाराष्ट्र के छह पर्यटकों में से चार के शवों को मुंबई और दो के शवों को पुणे ले जाए जाने की उम्मीद है। जम्मू-कश्मीर के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के कार्यालय से जारी बयान के अनुसार, मंगलवार को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में महाराष्ट्र के पांच पर्यटक मारे गए। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे और कम से कम 12 अन्य घायल हो गए। आतंकवादियों ने मंगलवार दोपहर कश्मीर के पहलगाम शहर के निकट एक लोकप्रिय मैदान पर गोलीबारी की। एकनाथ शिंदे ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू से महाराष्ट्र में फंसे पर्यटकों को निकालने के लिए विशेष उड़ान की व्यवस्था करने का आग्रह किया है। नायडू ने शिंदे को आश्वासन दिया कि फंसे हुए लोगों की सूची उपलब्ध होने के बाद, उन्हें मुंबई पहुंचाने को प्राथमिकता देने का प्रयास किया जाएगा।

बयान में कहा गया है कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए हमले में महाराष्ट्र के पांच पर्यटकों की जान चली गई। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उन्हें राज्य में वापस लाने की व्यवस्था के संबंध में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू से फोन पर बातचीत की। बातचीत के दौरान शिंदे ने नायडू से जम्मू-कश्मीर में फंसे महाराष्ट्र के पर्यटकों को वापस लाने के लिए विशेष उड़ान की व्यवस्था करने का अनुरोध किया।

अखिलेश का आरोप पहलगाम हमले में भी भाजपा आपदा में अवसर ढूंढ रही

भाजपा का पलटवार, सपा हमेशा तुष्टीकरण की राजनीति करती

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने भाजपा पर पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद आपदा में अवसर ढूंढने का आरोप लगाकर कहा कि पार्टी अपनी सत्ता के सिवा और किसी की सगी नहीं है। अखिलेश ने पोस्ट में भाजपा पर पहलगाम आतंकवादी हमले को लेकर बचकाना विज्ञापन जारी करने का आरोप लगाया। इस पर भाजपा ने पलटवार कर सपा पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा ने पहलगाम के बेहद दर्दनाक हादसे पर बचकाना विज्ञापन जारी कर साबित किया है कि भाजपा की संवेदना उन लोगों के प्रति शून्य है, जिन्होंने अपना जीवन खोया है और जिनके परिजनों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। भाजपा अपनी सत्ता के सिवा किसी की सगी नहीं है। घोर निंदनीय!

सपा प्रमुख ने हालांकि पोस्ट के साथ कोई विज्ञापन टैग नहीं किया है लेकिन पार्टी नेताओं का

मानना है कि उनका इशारा भाजपा की छत्तीसगढ़ इकाई द्वारा अपने एक्स हैंडल से पोस्ट की गई तस्वीर की तरफ था। तस्वीर में हमले के बाद के दृश्य का एनिमेटेड स्वरूप दिखाया गया है और साथ में लिखा है धर्म पूछा, जाति नहीं। अखिलेश ने कहा कि जब जम्मू कश्मीर में भाजपा सरकार ने सब कुछ अपने मन के हिसाब से किया है, तब इतने लोगों की मौत के लिए अपनी जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकती।

अखिलेश ने कहा कि भाजपाइयों और उनके संगी-साथियों के खिलाफ देश भर के करोड़ों लोगों के मन में उठ रहा गहरे दुख, रोष और क्रोध से भरा ये आक्रोशित सवाल गलत नहीं है कि अगर भाजपा और उनके संगी-साथी देश भर के पर्यटकों को जम्मू कश्मीर के भ्रमण पर जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, तब उनकी सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध पहले से क्यों नहीं किये गये? अखिलेश ने कहा कि अगर भाजपा सरकार ये बहाना करती है कि हमारे पास सुरक्षा बलों की कमी है, तब इसके लिए भी भाजपा सरकार ही जिम्मेदार है।

वहीं, अखिलेश के बयान पर भाजपा ने पलटवार किया है। भाजपा की उत्तर प्रदेश इकाई के महासचिव और पार्टी के राज्यसभा सदस्य अमरपाल मौर्य ने कहा कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि एक ऐसी पार्टी जो हमेशा तुष्टीकरण की राजनीति करती है। वर्तमान में भी राजनीति कर रही है, जब हम सभी को एक स्वर में पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के खिलाफ बोलना चाहिए। लेकिन, मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं अखिलेश कि आपकी तरह हम तुष्टीकरण की राजनीति नहीं करने वाले है। बल्कि हमारी सरकार इस कायराना हमले के दोषियों को मुंहतोड़ जवाब देगी।

महाराष्ट्र की पहली मुस्लिम महिला अदीबा अहमद बनी आईएएस, देश में 142वें स्थान पर

मुंबई, (एजेंसी)। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) 2024 परीक्षा के अंतिम परिणाम मंगलवार को घोषित किए गए। इनमें महिला अभ्यर्थी शक्ति दुबे ने देश में प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है, जबकि महाराष्ट्र के अर्चित डोंगरे देश में तीसरे स्थान पर आए हैं। इस वर्ष भी महाराष्ट्र के युवाओं ने यूपीएससी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर मराठी ध्वज फहराया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र के यवतमाल जिले की अदीबा अनम अशफाक अहमद ने भारत में 142वीं रैंक हासिल कर शानदार सफलता हासिल की है। अदीबा महाराष्ट्र की पहली महिला मुस्लिम आईएएस अधिकारी बन गई हैं। अदीबा ने अपनी स्नातक की पढ़ाई अबेदा इनामदार कॉलेज, पुणे से पूरी की। अदीबा ने बी.ए. उर्दू और बी.ए. गणित में स्नातक किया है। इसके बाद उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी। अदीबा हज हाउस आईएएस प्रशिक्षण संस्थान और बाद में जामिया आवासीय प्रशिक्षण संस्थान की छात्रा रही। उनकी सफलता के लिए उनके मित्रों, रिश्तेदारों और परिवार से उन्हें बधाई मिल रही है। इस बीच, अदीबा ने पहले यूपीएससी में साक्षात्कार दिया था, लेकिन उनका नाम अंतिम चयन सूची में नहीं आया। हालांकि, उन्होंने हार नहीं मानी और दोबारा यूपीएससी परीक्षा की तैयारी की। इस वर्ष के प्रयास में अंतिम सूची में उनके चयन पर परिवार ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

- मुंबई की अंकिता पाटिल देश में 303वें स्थान पर

मुंबई के मुलुंड की रहने वाली अंकिता पाटिल ने भी यूपीएससी परीक्षा में सफलता हासिल की है और भारत में 303वीं रैंक हासिल की है। इसलिए उनकी प्रशंसा की जा रही है और पाटिल परिवार में अंकिता की सफलता का जश्न बड़े हर्ष के साथ मनाया जा रहा है। इस सफलता के बाद अंकिता कहती हैं कि, मैं बहुत खुश हूं, मैंने पिछले तीन-चार सालों से कड़ी मेहनत की है। उन सभी वर्षों की कड़ी मेहनत रंग लाई।

दिल्ली समेत 14 राज्यों में चलेगी लू, 12 राज्यों में बारिश की संभावना

-यूपी में अगले कुछ दिन में तापमान पहुंच सकता है 47 डिग्री पर

नई दिल्ली(एजेंसी)। मौसम विभाग ने बुधवार को दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश सहित 14 राज्यों में हीटवेव की चेतावनी जारी की है। इस दौरान कई राज्यों में तापमान में 3-5 डिग्री की बढ़ोतरी हो सकती है। यूपी में अगले पांच दिन में अधिकतम तापमान 47 डिग्री पहुंचने का अनुमान है। राजस्थान के 4 जिलों में आज लू का यलो अलर्ट जारी किया गया है। 14 शहरों में मंगलवार को अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे ऊपर रहा।

वहीं मध्यप्रदेश के 6 जिलों में हीटवेव चलेगी। खजुराहो, नौगांव, पन्ना, सीधी में तापमान 45 डिग्री या इससे ज्यादा रह सकता है। उधर, छत्तीसगढ़ में मंगलवार को बीजापुर-तेलंगाना बॉर्डर पर लू से एक मजदूर की मौत हो गई। वह मिर्ची तोड़ने तेलंगाना गया था। मौसम विभाग ने 3 दिनों तक सरगुजा संभाग, रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग संभाग के 11 जिलों में लू का यलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने

कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मणिपुर समेत 12 राज्यों में बुधवार को बारिश की संभावना जताई है। अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में 27 अप्रैल तक भारी बारिश हो सकती है। असम और मेघालय में तेज आंधी-तूफान की आशंका है। 28 अप्रैल तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर प्रदेश में हीटवेव रहेगी। बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में अगले 2 दिन तक तेज गर्मी पड़ेगी। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम में 27 अप्रैल तक बारिश हो सकती है।

महागठबंधन के नेता जेडीयू के मुस्लिम नेताओं को बदनाम करने में जुटे: इकबाल हैदर

पटना (एजेंसी)। वक़्फ़ संशोधन बिल पर जेडीयू ने जब से संसद में समर्थन किया है तब से बिहार की राजनीति के साथ ही देश की सियासत में जेडीयू के स्टैंड को लेकर खूब चर्चा है। इस बीच जेडीयू के मुस्लिम नेताओं की बेचैनी कुछ ज्यादा ही बढ़ी हुई है। दरअसल, वक़्फ़ संशोधन बिल पर जेडीयू के समर्थन के बाद कई मुस्लिम नेताओं ने जेडीयू से इस्तीफा दे दिया है, इससे चुनावी साल में पार्टी की परेशानी बढ़ गई है। खासकर मुस्लिम वोट को लेकर पार्टी में चिंता है। लेकिन इसी बीच जेडीयू के एक बड़े मुस्लिम नेता ने आरोप लगाया है, जिससे बिहार में सियासी पारा चढ़ गया है।

दरअसल, जेडीयू के बड़े मुस्लिम नेता मेहर इकबाल हैदर ने आरोप लगाया है कि जेडीयू के मुस्लिम नेताओं को जान बूझकर षड्यंत्र के तहत हमारे विरोधी महागठबंधन की कुछ पार्टियों की ओर से बदनाम किया जा रहा है। इसमें दावा किया जा रहा है कि जेडीयू के मुस्लिम नेता वक़्फ़ के मुद्दे के बाद पार्टी से नाराज हैं और वे पार्टी छोड़ने वाले हैं। लेकिन, ये सरासर गलत है और उनकी छवि को बदनाम करने की साजिश है।

इकबाल कहते हैं कि वक़्फ़ संशोधन कानून पर नीतीश कुमार नजर बनाए हुए हैं और जब मामला अभी कोर्ट में है। बावजूद इसके हमारे विरोधी नीतीश और जेडीयू को मुस्लिम विरोधी बताने पर लगे हुए हैं। लेकिन, मुस्लिम समाज को मैं बताना चाहता हूं कि जब तक नीतीश हैं तब तक मुस्लिम समाज का कोई अहित नहीं कर सकता है।

वहीं, जेडीयू नेता के आरोप पर आरजेडी ने पलटवार किया है। आरजेडी के प्रवक्ता एजाज अहमद कहते हैं कि जेडीयू नेता का आरोप सरासर गलत है और ये सब जनता के गुस्से से बचने के लिए बयान दे रहे हैं। जेडीयू के नेता बीजेपी के विचारों में अपने को समाहित कर चुके हैं और उनके नेता नीतीश कुमार चुप्पी साधे हुए हैं।

हिमालय में सालों से कम हो रही बर्फबारी, जल सुरक्षा खतरे में?

-दो अरब की आबादी पिघलते ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर निर्भर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमालय-हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला में बर्फबारी पिछले 23 सालों में अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। यह हालात उन दो अरब लोगों के लिए गंभीर खतरा है जो पिघलते ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर निर्भर हैं। एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला में बर्फ की कमी का यह रुझान लगातार तीसरे साल भी जारी है और इससे क्षेत्र में जल सुरक्षा खतरे में पड़ गई है।

हिमालय-हिंदुकुश पर्वत श्रृंखला अफगानिस्तान से म्यांमार तक फैली है, जबकि आर्कटिक और अंटार्कटिक महाद्वीप के बाद बर्फ और ग्लेशियरों का सबसे बड़ा भंडार इसी क्षेत्र में है। ये जलाशय करीब दो अरब लोगों के लिए ताजे पानी का मुख्य स्रोत हैं, जबकि कृषि, घरेलू इस्तेमाल और अन्य जरुरतों के लिए भी इन्हीं जलाशयों पर निर्भर रहा जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस क्षेत्र में मौसमी बर्फ आवरण सामान्य से 23.6 फीसदी कम है, जो पिछले 23 सालों में सबसे निचला स्तर पर है। रिपोर्ट के मुख्य लेखक शेर मोहम्मद ने कहा कि इस साल बर्फबारी जनवरी के अंत में शुरू हुई और पूरे शीतकाल में औसत से कम रही। उन्होंने कहा कि इस कमी से नदी के प्रवाह में संभावित कमी, भूजल पर निर्भरता में वृद्धि, और सूखे जैसे जोखिम में वृद्धि हो सकती है। क्षेत्र के कई देशों ने पहले ही सूखे की चेतावनी जारी कर दी है, जबकि फसल की पैदावार और पानी की उपलब्धता भी खतरे में है। यह स्थिति उस आबादी के लिए और भी जटिल है जो लंबे समय तक चलने वाली, तीव्र और बार-बार आने वाली गर्मी की लहरों से जूझती हैं।

भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार और नेपाल अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र के सदस्य देश पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ता हैं। अंतर-सरकारी निकाय ने क्षेत्र की 12 प्रमुख नदी घाटियों पर निर्भर देशों से जल प्रबंधन, सूखे की तैयारी, पूर्व चेतावनी प्रणालियों में सुधार करने और क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने का आग्रह किया है। रिपोर्ट में विशेष रूप से बताया गया है कि दक्षिण-पूर्व एशिया की दो सबसे लंबी नदियां मेकांग और सालवीन, जो चीन और म्यांमार को पानी देती हैं, उनकी करीब आधी बर्फ पिघल चुकी है। आईसीआईएमओडी के महानिदेशक ने दीर्घकालिक समाधान के लिए नीतिगत बदलावों का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि कार्बन उत्सर्जन ने हिंदुकुश पर्वतमाला में अभूतपूर्व बर्फ हानि के मार्ग को अपरिवर्तनीय बना दिया है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए तुरंत उपाय किए जाने की जरुरत पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम विज्ञान संगठन के मुताबिक एशिया जलवायु संबंधी आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र है।

मार्च महीने में एक रिपोर्ट जारी की गई है,

जिसके मुताबिक पिछले छह सालों में से पांच साल ऐसे थे जिनमें ग्लेशियरों में सबसे तेज गिरावट देखी गई। यह स्थिति इस क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिरता और मानव जीवन के लिए बढ़ती कठिनाइयों का संकेत दे रही है।

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

पहलगाम, कश्मीर में आतंकी हमले में शिकार हुए निर्दोष पर्यटकों की आत्मा को ईश्वर अपने निकटस्थ स्थान दें।

LIVE18 NEWSNETWORK

क्रम	नाम	जिला/शहर	राज्य/देश
1	शुभम द्विवेदी	कानपुर	उत्तर प्रदेश
2	नीरज उधवानी	उत्तराखंड,	राजस्थान
3	विनय नारवाल	करनाल	हरियाणा
4	दिनेश अग्रवाल	चंडीगढ़	चंडीगढ़ (UT)
5	सुशील नथानियल	इंदौर	मध्य प्रदेश
6	सैयद आदिल हुसैन शाह	पहलगाम	जम्मू और कश्मीर
7	जे सचंद्रा मौली	विशाखापत्तनम	आंध्र प्रदेश
8	समीर गुहा	कोलकाता	पश्चिम बंगाल
9	बिटन अधिकारी	कोलकाता	पश्चिम बंगाल
10	मनीष रंजन	पुरुलिया पश्चिम बंगाल,	बिहार
11	दिलीप दिसले	मुंबई	महाराष्ट्र
12	हेमंत सुहास जोशी	मुंबई	महाराष्ट्र
13	संजय लक्ष्मण लेले	ठाणे	महाराष्ट्र
14	अतुल श्रीकांत मोने	ठाणे	महाराष्ट्र
15	संतोष जगदाले	पुणे	महाराष्ट्र
16	कौस्तुभ गणबोटे	पुणे	महाराष्ट्र
17	एन. रामचंद्रन	कोच्चि	केरल
18	प्रशांत कुमार सतपति	बालासोर	ओडिशा
19	मधुसूदन सोमिसेट्टी राव	बेंगलुरु	कर्नाटक
20	भरत भूषण	बेंगलुरु	कर्नाटक
21	मंजू नाथ राव	शिवमोग्गा	कर्नाटक
22	यतीश परमार	भावनगर	गुजरात
23	सुमित परमार (यतीश के पुत्र)	भावनगर	गुजरात
24	शैलेशभाई हिमत भाई कालथिया	सूरत	गुजरात
25	टगेहाल्येंग	-	अरुणाचल प्रदेश
26	सुदीप नवपने	-	नेपाल

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक अमृता आर पंडित द्वारा साई प्रिंटिंग प्रेस, बी- 868, न्यू अशोक नगर दिल्ली 110096 से मुद्रित तथा ए-115, गली नंबर 13, नई अशोक नगर, दिल्ली 110096 से प्रकाशित।
संपादक - अमृता आर पंडित, मो 8587969284, Mail ID - live18newsnetworktv@gmail.com सभी विवादों के न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय में होगा।